मई-जून, 2019

बच्चों की रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिपूर्ण पत्रिका

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

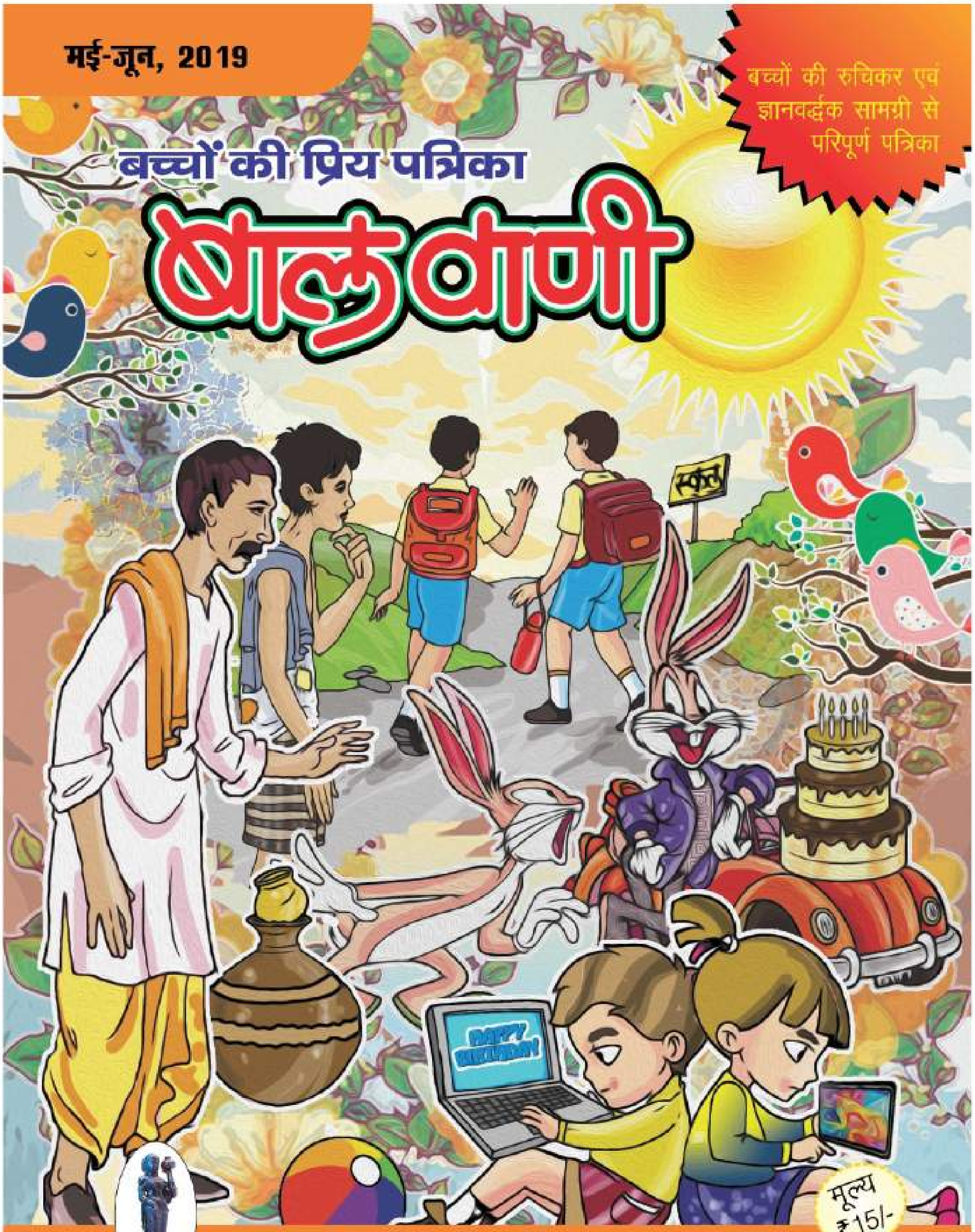

मूल्य ₹15/-

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

स्मरण

अखियाँ प्यासी

श्यामनारायण पाण्डेय

थाल सजाकर किसे पूजने
चले प्रात ही मतवाले?
कहाँ चले तुम राम राम का
पीताम्बर तन पर डाले?
कहाँ चले ले चन्दन अक्षत
बगल दबाये मृगछाला?
कहाँ चली यह सजी आरती?
कहाँ चली जूही-माला?
ले मुञ्जी उपवीत मेखला
कहाँ चले तुम दीवाने?
जल से भरा कमण्डलु लेकर
किसे चले तुम नहलाने?
मुझे न जाना गंगासागर,
मुझे न रामेश्वर, काशी।
तीर्थराज चित्तौड़ देखने को,
मेरी आँखें प्यासी।।

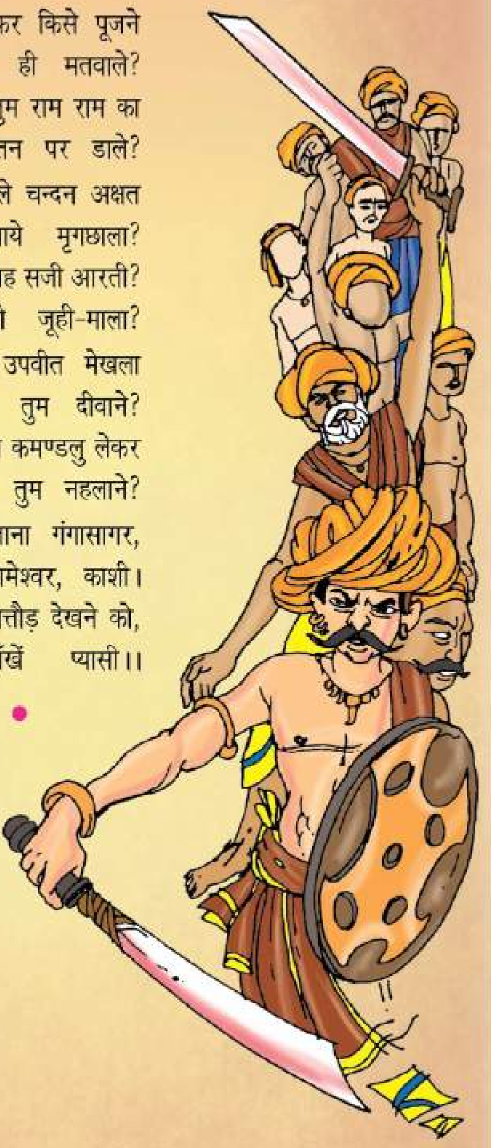

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

मई–जून, 2019 वर्ष–20, अंक–3

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

मुख्य सम्पादक
डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त

प्रबन्ध सम्पादक
शिशिर

सम्पादक
डॉ. अमिता दुबे

सहायक सम्पादक
श्याम कृष्ण सक्सेना

कलासज्जा
रजनी श्रीवास्तव

बालवाणी
सदस्यता शुल्क
प्रति अंक 15.00
वार्षिक 80.00
आजीवन 1000.00

प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, हज़रतगंज, लखनऊ-226001 दूरभाष : 0522-2614470-71
ई-मेल : directoruphindi@yahoo.in, वेबसाइट : www.uphindisansthan.in
मुद्रक : रोहिताश्व प्रिण्टर्स, 268, ऐशबाग रोड, लखनऊ

बालवाणी सदस्यता शुल्क : प्रति अंक : 15.00, वार्षिक : 80.00, आजीवन : 1000.00

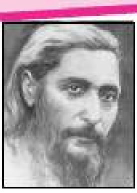

क्या गाऊँ ?

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

क्या गाऊँ? – माँ! क्या गाऊँ?
गूँज रही हैं जहाँ राग–रागिनियाँ,
गाती है किन्नरियाँ – कितनी परियाँ –
कितनी पंचदशी कामिनियाँ,
वहाँ एक यह लेकर वीणा दीन
तन्त्री–क्षीण, – नहीं जिसमें कोई झंकार नवीन,
रुद्ध कण्ठ का राग अधूरा कैसे तुझे सुनाऊँ?
माँ ! क्या गाऊँ!

छाया है मन्दिर में तेरे यह कितना अनुराग।
चढ़ते हैं चरणों पर कितने फूल
मृदु–दल, सरस–पराग;
गन्ध–मोद–मद पीकर मन्द समीर
शिथिल चरण जब कभी बढ़ाती आती,
सजे हुए बजते उसके अधीर नूपुर–मंजीर !
वहाँ एक निर्गन्ध कुसुम उपहार,
कहीं–कहीं जिसमें पराग–संचार सुरभि–संसार
कैसे भला चढ़ाऊँ?
माँ ! क्या गाऊँ?

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सम्पादकीय

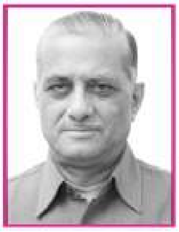

प्रिय बच्चो,

आपके परीक्षाफल घोषित हो गये होंगे और आप अच्छे अंकों के साथ अगली कक्षाओं में गये होंगे। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको नयी कक्षाओं में भी अच्छी सफलता प्राप्त हो। कुछ दिन बाद गर्मी की छुट्टियाँ होंगी। आप इन छुट्टियों का सदुपयोग कई प्रकार से करेंगे। आप जहाँ देशाटन के माध्यम से देश के विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश से परिचित होंगे, वहीं किसी सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था के माध्यम से सामाजिक गतिविधियों का हिस्सा बनेंगे। इन गतिविधियों से आपके भीतर सामाजिक संवेदना का विकास होगा। ग्रीष्म ऋतु अपनी पूरी प्रखरता दिखा रही है। निराला के शब्दों में इसका वर्णन करें तो 'चढ़ रही थी धूप गर्मियों के दिन दिवा का तमतमाता रूप उठी झुलसाती हुई लू रूई ज्यों जलती हुई भू, गर्द चिनगी छा गयी' वाला रूप देखने को मिल रहा है। पर प्रकृति ने ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से रक्षा करने वाले फल और सब्जियाँ भी उपहार स्वरूप दी हैं। यह ऋतु आम, लीची, खरबूजा और तरबूज, खीरा, ककड़ी का है। आम तो फलों का राजा है। हमें अपने बचपन के दिन भी याद आते हैं जब गर्मी की छुट्टियों में हम गाँव में अमराई में विभिन्न प्रकार के खेल खेलते थे और प्राकृतिक ढंग से पके आम के स्वाद का आनन्द लेते थे पर अब तो आम के बाग कहाँ रहे। अमराई का स्थान कंक्रीट के जंगलों ने ले लिया है। गाँव भी इससे अछूते नहीं रहे। हमने इसे ही विकास का रूप समझ लिया है। अब इसके दुष्परिणाओं से लोग परिचित हो रहे है तो 'इको फ्रेंडली' विकास का अभियान चलाया जा रहा है। आप भी इस अभियान से जुड़ें यही हमारा आपसे अनुरोध है।

यह अंक भी अन्य अंकों की भाँति विविध प्रकार की रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक रचनाओं से परिपूर्ण है। वीर रस के

प्रखर कवि श्याम नारायण पाण्डेय की कविता 'अँखियाँ प्यासी' स्वाधीनता और स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप की कर्मस्थली चित्तौड़ के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की व्यंजना करती है। छायावाद के प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'क्या गाऊँ' भारतमाता को संबोधित है। धारावाहिक रूप में प्रकाशित पंचतंत्र से ली गयी कहानी 'अक्ल बड़ी कि भैंस' रोचक ढंग से बुद्धि की महत्ता का प्रतिपादन करती है। 'खरगोश का हैप्पी बर्थ डे' कहानी मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों के बीच रागात्मक सम्बन्ध पर बल देती है। देवाशीष उपाध्याय की कहानी 'शपथ' शारीरिक अक्षमता के बावजूद लगन एवं निष्ठा के बल पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर देश की महान् विभूति थे। शंकरलाल माहेश्वरी का लेख इस पर विधिवत् प्रकाश डालता है। पर्यावरण संतुलन वर्तमान विश्व की सबसे बड़ी चुनौती है। 'हानिकारक प्लास्टिक' लेख इसी समस्या से सम्बद्ध है। हमारे महानगर आज प्रदूषण के सर्वाधिक शिकार हैं। हमें इसके प्रति जागरूक होना पड़ेगा अन्यथा हमें इसके भयंकर परिणाम भोगने पड़ेंगे। आप भी पर्यावरण के महत्व को समझते हुए अपने आसपास के परिवेश को साफ-सुथरा रखने का प्रयास करेंगे ही।

इस अंक में उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद कविताएँ भी दी गयी हैं। आशा है, यह अंक भी आपको रुचिकर लगेगा। आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत करायेंगे।

आपका
सदानन्दप्रसाद गुप्त

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

मई–जून, 2019 वर्ष-20, अंक-3

अनुक्रम

स्मरण

अखियाँ प्यासी (कविता)	श्याम नारायण पाण्डेय	आवरण-2
क्या गाऊँ?	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	2

कहानी

अक्ल बड़ी कि भैंस	आचार्य विष्णु शर्मा	7
खरगोश का हैप्पी बर्थ डे	सुशील सरित	10
शपथ	देवाशीष उपाध्याय	13
असली हीरो	सूर्यलता जायसवाल	18
गलती का अहसास	पवन चौहान	56

लोककथा

दयालु बालक	भूपिंदर सिंह आशट	59

कविता

पंछी की व्यथा	रूपनारायण काबरा	12
दादा, मोटू भाई	राजकुमार सचान	27
भोंदू और तरबूजा	चन्द्रमोहन दिनेश	28
नीलकमल	बहादुर चौहान	37
गिलहरी और टिटहरी, शरारत, मक्का का भुट्टा, काली चिड़िया	दीपू सिंह	38
जब-जब आता है रविवार	रामनरेश उज्ज्वल	39
उठो सबेरे	रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'	44
इण्टरनेट	अजय कुमार मिश्र 'अजय श्री'	45
मौसम हो गया गरम बड़ा	डॉ0 गोपाल राजगोपाल	46
चींटी की सीख, भालू लिए मदारी आया	डॉ0 राजेन्द्र पंजियार	47
श्रमजीवी चींटी	शिवअवतार रस्तोगी 'सरस'	53
छुट्टियाँ भई छुट्टियाँ	शैलेन्द्र सरस्वती	54
विश्व के प्रथम	काली शंकर	55

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

मई–जून, 2019 | वर्ष-20, अंक-3

अनुक्रम

ज्ञानवर्द्धक लेख		
भारत रत्न डॉ0 भीमराव अम्बेडकर	शंकर लाल माहेश्वरी	23
महान वैज्ञानिक डॉ0 मेघनाथ साहा	बबिता बसाक	40
हानिकारक प्लास्टिक	अंकुश्री	48
चित्रकथा		
राजिम की कहानी	परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव	29
बच्चों की कलम से		
माते (कविता)	आशीष सिंह	62
संदेश (कविता)	समीक्षा	63
जिन्दगी (कविता)	अदिति श्रीवास्तव	64
बच्चों की तूलिका		
चित्र-1	अंकुर शुक्ला	आवरण-3
चित्र-2	श्रुति श्रीवास्तव	आवरण-3

रचनाकारों से

- *'बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी (द्वैमासिक) के लिए विभिन्न विधाओं की रचनाएँ, लेख, कहानी, कविता आदि आमंत्रित हैं।*
- *रचनाएँ स्पष्ट, हस्तलिपि में अथवा टंकित कागज के एक ओर हों, तथा रचनाकार का सम्पर्क सूत्र यथा पूरा पता, मोबाइल अथवा फोन नम्बर, ई-मेल अवश्य लिखें।*
- *अस्वीकृत रचनाएँ वापस नहीं की जातीं। अतः एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।*
- *बालवाणी में प्रकाशित रचना के मानदेय से पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता दी जाती है। अतः वर्ष में सामान्यतः एक ही रचना प्रकाशित की जा सकती है।*
- *रचना प्रकाशित होने पर लेखकीय प्रति प्रेषित की जाती है।*

- सम्पादक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

अक्ल बड़ी कि भैंस

आचार्य विष्णु शर्मा

(गतांक से आगे... पिछले अंक में हमने 'जुलाहे और राजकुमारी की कथा' पढ़ी थी। कहानी के अंत में करटक ने संजीवक को अकलमंद और शेर को खूंखार बताया तब दमनक ने कौवे और काले सांप की कहानी सुनायी .... सम्पादक)

एक जंगल में बरगद का वृक्ष था। उसके एक खोह में कौवे का जोड़ा रहता था। उसी खोह के पास एक काला नाग रहता था। जब-जब कौवी बच्चे पैदा करती थी तब-तब वह नाग उन बच्चों को उड़ने के पहले ही खा जाता था। दोनों इससे बड़े दुखी थे। कौवी अपने पति से शिकायत करती पर शक्ति के समक्ष दुर्बल क्या कर सकता है!

हारकर वे दोनों एक सियार के पास गये। उन्होंने उसे अपनी व्यथा-कथा सुनायी। कहा - 'आप बुद्धिमान हैं अतः कोई उपाय बताइए।' कहा है - जिसका खेत नदी के तट पर हो, जिसकी पत्नी दूसरे से सम्बन्ध रखती हो, जो सांप वाले घर में हो, उसे कभी भी चैन नहीं मिल सकता। सांप का कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं। कौवे ने कहा कि हम पल-पल आतंक में जीते हैं।'

सियार ने तुरन्त कहा, 'इस दुष्ट से डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह शक्ति से नहीं अक्ल से मारा जायेगा। ....अक्ल से शक्तिशाली शत्रुओं पर विजय पायी जा सकती है। कई तरह की मछलियाँ खाने के बाद एक बगुला केकड़े को पकड़ने के चक्कर में मारा गया?'

'वह कैसे?'

सियार ने बताया, 'ऐसे?'

बगुले और केकड़े की कथा

किसी नगर में एक तालाब था। वह तरह-तरह की मछलियों व जलजीवों से भरा था। वहाँ एक बगुला भी रहता था जो बुड्ढा हो चला था। बुड्ढा होने के कारण वह मछलियाँ पकड़ने में असमर्थ हो गया। भूख भला किसी की दोस्त कैसे हो सकती है। बगुला बेचारा भूखा मरने लगा। वह इतने आँसू बहाता था कि जमीन

भीग जाती थी।

उसकी यह लाचारी एक केकड़ा देख रहा था। उसे उस पर दया आ गयी। वह अपने जलजीवों के साथ उसके पास आया। बोला, 'मामा! आप रो क्यों रहे हो?'

'पुत्र! मैंने वैराग्य ले लिया है। मछली खाना छोड़ दिया है। आमरण अनशन कर लिया है।'

'उसकी क्या वजह है?' केकड़े ने पूछा।

बगुले ने लम्बी साँस लेकर कहा, 'मैं इसी तालाब के किनारे छोटे से बड़ा हुआ हूँ। मुझे भविष्यवक्ता ने कहा है कि अगले बारह बरसों तक वर्षा नहीं होगी।'

'सच।'

'हाँ बेटे, शकट शनि, रोहिणी को भेदकर शुक्र-मंगल के आगे बढ़ने वाले हैं। बराहमिहिर ने कहा है कि यदि शनि ग्रह रोहिणी को भेद दे तो बारह बरस तक वर्षा नहीं होगी। इन ग्रहों के कारण ऐसे अमानवीय संकट पैदा होंगे कि आदमी राक्षस हो जायेगा।... सोचो, इस तालाब में जरा-सा पानी है। वह देखते-देखते सूख जायेगा। फिर सारे जलजीव भगवान को प्यारे हो जायेंगे। मैं भला इन जीवों की मृत्यु कैसे देख सकता हूँ। अतः यह अनशन किया है। मुझे मालूम है कि बड़े जलचर स्वतः ही बड़े तालाबों की ओर जा रहे हैं पर इस तालाब के छोटे जीव यानी मछलियाँ निशंक हैं। मैं इनकी मौत देखूं, इससे पहले मैं मर जाऊँ तो उत्तम।'

केकड़े ने दूसरे जलजीवों को बगुले की बातें बतायीं। सारे जलजीव भयभीत हो गए। इकट्ठे होकर बगुले के समक्ष आए। पूछने लगे, 'मामा! कोई उपाय बताइए।'

बगुले ने सोचकर कहा, 'यहाँ से थोड़ी दूर पर कमलों से सुशोभित एक शानदार सरोवर है। उसमें अथाह जल है। वह कभी नहीं सूखता। जो मेरी पीठ पर बैठ जाए, उसे मैं वहाँ ले चलूँगा।'

बस फिर क्या था। सभी उसकी पीठ पर सवार होने को लालायित थे। बगुला हर रोज एक मछली को ले जाता और चट्टान के पीछे जाकर

उसे चट कर जाता। ....कई दिनों के बाद केकड़े ने कहा कि उसने उसकी सारी बातें जलजीवों को समझायीं और वह उसे ही लेकर क्यों नहीं जाता?

बगुले ने विचारा कि मछलियों का मांस खाते-खाते वह बीमार हो गया है। आज क्यों न केकड़े को खाकर स्वाद बदला जाय।

उसने केकड़े को अपनी पीठ पर बिठा लिया। चल पड़ा। काफी दूर चलने पर केकड़े ने पूछा, 'मामा....मामा.... वह तालाब कितनी दूर है?'

बगुले ने गर्व से कहा, 'कोई तालाब-वालाब नहीं है। मैंने तो जलजीवों को भयभीत करके अपना पेट भरने का तरीका ढूंढ़ा है। अब तुम्हें भी चट्टान पर पटककर खाऊंगा।'

केकड़े ने तुरन्त अपने दोनों पंजों से उसकी पतली गर्दन दबोच ली। थोड़ी देर में वह मर गया। उसकी गर्दन लेकर केकड़ा तालाब के पास आया और बगुलाभगत की बेईमानी का पर्दाफाश किया।

झूठ और लोभ के फेर में बगुला केकड़े के द्वारा माया गया।

इस कथा को सुनकर कौवा और कौवी उड़ चले। उड़ते-उड़ते वे एक तालाब के घाट पर पहुँचे। यहां राजा की रानियां नहा रही थीं। उनके जेवर खुले में पड़े थे। कौवे ने कौवी को संकेत किया कौवी ने एक स्वर्ण-जंजीर उठा ली। वे उड़ चले। साथ में आये रखवालों ने उन कौवे-कौवी का पीछा किया।

कौवी ने उस जंजीर को सांप के 'खोल' में डाल दिया। रखवाले शस्त्र सज्जित थे। उन्होंने उस खोल में काले नाग को देखा तो उसे मार डाला और जंजीर लेकर चलते बने। नाग के मर जाने के बाद कौवा-कौवी सुख से रहने लगे।

करटक को दमनक ने कहा, 'जो काम अक्ल से हो सकता है, वह बल से नहीं। कहा भी है कि जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बल भी है। बुद्धि से एक मदमाते सिंह का सर्वनाश खरगोश ने कर दिया।'

'किस तरह?'

दमनक ने कहा, 'इस तरह।'

- (पंचतंत्र से साभार) क्रमशः

खरगोश का हैप्पी बर्थ डे

सुशील सरित

पप्पू जी की और बिन्टू खरगोश में बड़ी दोस्ती थी। वैसे तो बिन्टू खरगोश जंगल में रहता था और पप्पू जी के पापा जंगल के पास ही एक मकान में रहते थे लेकिन अक्सर मकान के लान में जब पप्पू खेलने जाता तो बिन्टू खरगोश भी आ जाता और पप्पू बिन्टू खरगोश को पत्ते खिलाता, अंगूर खिलाता और बिन्टू पप्पू के साथ छिपा-छिपी खेलता। एक दिन पप्पू की हैप्पी बर्थ डे थी। पप्पू ने बिन्टू को भी बर्थ डे पर आने को कहा। बिन्टू समय पर आ गया तो पप्पू ने उसे चुपचाप कमरे की खिड़की में पीछे बैठा दिया। बर्थ डे में केक कटा तो पप्पू चुपके से केक का एक पीस बिन्टू को भी खिला आया बिन्टू को केक खाने में बड़ा मजा आया। घर आकर बिन्टू ने अपनी मम्मी को बताया और यह भी कहा कि अगले महीने उसकी भी बर्थ डे जंगल में मनायी जानी चाहिये। 'चुप जंगल में कहीं बर्थ डे होती है', मम्मी ने बिन्टू को डाँट दिया।

बिन्टू उस दिन तो चुपचाप सो गया लेकिन बर्थ डे मनाने की बात उसके मन से नहीं निकली। तीन चार दिन बाद जब बिन्टू खरगोश अपने जंगल के और साथियों तोता, मैना, कोयल, बकरी और चूहे के साथ बैठा हुआ था तो फिर पप्पू की बर्थ डे की बात चल निकली। बिन्टू के मन में भी बर्थ डे मनाने की बात है यह सुनकर बकरी कुछ सोचते हुए बोली - 'देखो बिन्टू की बर्थ डे

तो मैं मनवा दूँगी लेकिन जंगल में केक कहाँ से आयेगा।' 'मौसी केक तो पप्पू ले आयेगा' बिन्टू उछलता हुआ बोला। 'ठीक है अगर पप्पू केक ले आये तो बिन्टू की बर्थ डे की दावत मैं करवा दूँगी।' 'लेकिन तुम सबको साथ देना होगा।'

'हम सब तैयार हैं लेकिन दावत जोरदार होनी चाहिये' सब बोल उठे। 'ठीक है तो अगले सण्डे को बिन्टू खरगोश की बर्थ डे पार्टी मनायेंगे' बकरी ने कहा और बिन्टू उछलता कूदता पप्पू के पास यह खबर देने चला गया।

सन्डे भी आ गया। आम के पेड़ के पास ही एक खाली जगह पड़ी थी वहीं बर्थ डे पार्टी का इन्तजाम बकरी मौसी ने किया। केले के पत्ते बंदर तोड़ लाया और बंदरिया ने उन्हें काट-काट कर रख दिया ताकि उन्हें प्लेट की तरह प्रयोग किया जा सके। तोते ने मीठे-मीठे अमरूद छाँटे और लंगूर उन्हें तोड़ लाया। भालू ने आम तोड़े और शहद लाकर दिया। केले भी आ गये। तोता-मैना ने मिलकर आम के पत्ते तोड़कर उनसे पूरा मैदान सजा दिया और छोटी चिड़िया ढेर सारे फूल तोड़ लायी बस अब देर थी तो पप्पू की। सब पप्पू का ही इन्तजार कर रहे थे। समय बीतता जा रहा था। क्या बात है दो घंटे बीत गये पप्पू अभी तक केक लेकर नहीं आया थोड़ी देर में शाम हो जायेगी फिर बर्थ डे कैसे मनेगी कोयल परेशान हो गयी। 'क्या बात है बिन्टू' बिन्टू को परेशान देखकर बिन्टू की मम्मी ने पूछा। 'मम्मी पप्पू अभी तक केक लेकर नहीं आया' बिन्टू उदास होकर बोला। 'अच्छा मैं जाकर देखती हूँ' कहकर बिन्टू की मम्मी पप्पू के घर की

तरफ चली गयी। थोड़ी देर बाद ही सब लोगों ने देखा कि बिन्टू की मम्मी के साथ पप्पू खाली हाथ चला आ रहा है। 'क्यूँ केक कहाँ है'। 'एक तो इतनी देर से आये ऊपर से खाली हाथ वाह अच्छी दोस्ती निभायी' बिन्टू पप्पू को खाली हाथ देखकर गुस्सा हो गया। 'बर्थ डे पार्टी होगी और जोरदार होगी, पप्पू तुम्हारा पक्का दोस्त है, वो देखो केक भी आ रहा है', बिन्टू की मम्मी ने हँसते हुए पीछे इशारा किया। तब सबने देखा कि पप्पू की मम्मी खूब बड़ा-सा केक लेकर पीछे-पीछे आ रही थीं।

'इतना बड़ा केक', बिन्टू खुशी से चिल्लाया, फिर क्या था बिन्टू ने फटाफट केक काटा और खूब जोर से आम, केले, शहद और अमरूद की दावत हुई। सबने बिन्टू को हैप्पी बर्थ डे कहा और बिन्टू की हैप्पी बर्थ डे हो गई।

- 36, अयोध्या कुंज-ए, आगरा-282001 मोबाइल : 09411085159

कविता

पंछी की व्यथा

रूपनारायण काबरा

नहीं पेड़ ना हरियाली है
टीले ही टीले जंगल में,
जिधर देखता बंजर धरती
ना पक्षी हैं जंगल में।

कहाँ बनाये अरे घोंसला?
कहाँ मिलेंगे मीत पुराने?
ढूँढ़ रहा हूँ हरियाली को
जंगल जंगल गाँव गाँव में,

उड़ उड़ कर मैं तो थक हारा
कहाँ गया आवास हमारा?
हम भी तो हैं मीत तुम्हारे
पशु पक्षी सब गीत तुम्हारे;

वृक्ष मित्र हैं रखवाले हैं
वायु शुद्ध करने वाले हैं।
ईंधन, भोजन, लकड़ी देते
लेते कुछ ना, सब कुछ देते,

क्यों वृक्षों को काट रहे हो?
क्यों हमको दुख बाँट रहे हो?
खुद भी दुख पाते जाते हो
फिर भी बाज नहीं आते हो।

- ए-438, किशोर कुटीर,
वैशाली नगर, जयपुर-302021

शपथ

देवाशीष उपाध्याय

रुद्र आज सुबह से बहुत खुश और उत्साहित था। आज उसके 15 साल के उपेक्षित और निराशापूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन जो था। आज राज्यपाल द्वारा प्रदेश के मेधावी और प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया जाना था। प्रदेश की राजधानी में बहुत बड़े स्टेज पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री और जानी-मानी हस्तियाँ विद्यमान थीं। इस साल दसवीं की बोर्ड परीक्षा में रुद्र ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। रुद्र का जीवन अनेक झंझावातों, उपेक्षाओं और तिरस्कारों से होकर गुजरा था। रुद्र अत्यन्त गरीब परिवार में पैदा हुआ था। उसके पिताजी मजदूरी कर परिवार का लालन-पालन करते थे। बचपन में पोलियो हो जाने के कारण वह चलने-फिरने में अक्षम हो गया था। वह वैसाखी या व्हील चेयर के माध्यम से ही चल-फिर पाता था। शारीरिक रूप से विकलांग होने के कारण रुद्र को स्कूल और समाज में सदैव उपेक्षा और उपहास का सामना करना पड़ता था। हालांकि उसके मां-बाप उसे बहुत प्यार करते थे। उसके पिता का सपना था कि, रुद्र अच्छे अंक प्राप्त करे, जिससे कोई अच्छी सी नौकरी मिल जाए और वह दूसरों पर निर्भर न रहे। यद्यपि रुद्र के पिता उसे अच्छे स्कूल में पढ़ाने में असमर्थ थे।

रुद्र की प्राथमिक शिक्षा गाँव के प्राइमरी स्कूल से हुयी थी। शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण विद्यालय में उसके साथ पढ़ने वाले, उसके सहपाठी और अन्य छात्र-छात्राएँ बात-बात पर तंज कसते, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते रहते और उपहास करते थे। इतना ही नहीं समाज के सम्मानित वर्ग और शिक्षक भी उसके प्रति सहानूभूति की बजाय उपेक्षा का दृष्टिकोण रखते थे। रुद्र स्वयं को बचपन से उपेक्षित महसूस करता था। वह पढ़ने में बहुत मेधावी तो नहीं था, लेकिन औसत श्रेणी का बालक सदैव रहा है। नौवीं तक की पढ़ाई उसने औसत छात्र के रूप में पूरी की। लेकिन दसवीं की बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में टाप कर जाने से उसके परिवार, समाज और विद्यालय के सभी लोग आश्चर्यचकित थे।

सम्मान समारोह स्थल पर बड़ा सा स्टेज बना था, रुद्र को मंच पर जाने के लिए अलग से रैम्प की व्यवस्था की गई थी। उसे अच्छे कपड़े पहनाए गए, पिछले दस दिनों से टीवी वाले उसका इंटरव्यू

ले रहे थे, टीवी चैनल वाले प्रेरणास्वरूप उसकी सफलता की स्टोरी चला रहे थे। रुद्र औसत और गरीब बच्चों का हीरो बन चुका था। इतना ही नहीं उसके माता-पिता, गांव वाले, विद्यालय के शिक्षक और छात्र-छात्राएँ भी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। क्योंकि उसने सभी का नाम रोशन किया था। सभी लोग रुद्र के साथ पूर्व में किए व्यवहारों के लिए शर्मिंदा थे। स्टेज पर रुद्र के नाम के उद्घोष के साथ उसका संक्षिप्त परिचय दिया गया। उसने कैसे विषम परिस्थितियों का सामना कर इतना महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया। रुद्र के पिता उसे व्हील चेयर के सहारे स्टेज पर ले कर गये। रुद्र के आंखों से खुशी के आंसू छलक रहे थे। राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने अपने हाथों से रुद्र को गोल्ड मेडल, पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने रुद्र के आगे की पूरी पढ़ाई का खर्च सरकार द्वारा वहन करने की घोषणा की और आर्थिक सहायता देने की बात कही। मुख्यमंत्री ने रुद्र से अपनी सफलता के विषय में कुछ कहने के लिए आमंत्रित किया।

रुद्र, बड़े-बड़े राजनेताओं, अधिकारियों, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं की इतनी बड़ी भीड़ को देखकर भावुक सा हो गया और एक मिनट के लिए तो वह डर सा गया कि, क्या बोले? दो मिनट कुछ सोचने के बाद रुद्र ने बोलना शुरू किया, आदरणीय राज्यपाल महोदय, मुख्यमंत्री महोदय, बोर्ड के सचिव महोदय एवं समस्त अधिकारीगण, पूज्यनीय गुरुजन और मेरे प्यारे दोस्तो!

आप लोग सोच रहे होंगे कि, बोर्ड परीक्षा टॉप करने वाले छात्र अत्यंत मेधावी एवं प्रतिभाशाली होते हैं। वह किसी दूसरे ग्रह के प्राणी होते हैं। जी नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं है, यह हम सबकी गलत धारणा है। मैं बचपन से मध्यम श्रेणी का बालक रहा हूँ। शारीरिक अपंगता के कारण समाज और विद्यालय में सदैव उपेक्षित और उपहास का पात्र रहा हूँ। अधिकाशः लोग मुझे हीन और निकृष्ट भावना से देखते थे। बच्चे तो बच्चे, शिक्षक भी मेरा अप्रत्यक्ष रूप से मजाक और उपहास करते थे। मैं सदैव यही सोचा करता था कि, क्या इन परिस्थितियों के लिए मैं जिम्मेदार हूँ? शारीरिक समस्या या अपंगता तो किसी के साथ हो सकती है। मैंने जानबूझकर तो इन शारीरिक समस्याओं को आमंत्रित किया नहीं है। इस प्रकार की समस्या तो किसी के साथ भविष्य में भी हो सकती है। जो आज स्वयं को सबल समझते हैं, कल ईश्वर उनके साथ कोई दुर्घटना घटित कर दें और वे किसी समस्या से ग्रसित हो जायें। तो क्या होगा? क्या विकलांग होना अभिशाप है????.................

यह भी सही है कि, कुछ लोगों ने सहानुभूतिपूर्वक मेरा सहयोग

किया और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, मैं उनका सदैव आभारी रहूँगा। सबसे बड़ी बात, मैं ईश्वर का धन्यवाद करना चाहूंगा कि, ईश्वर ने मुझे किसी बड़े लक्ष्य के लिए चुना है। इसीलिए मुझमें इतना बड़ा साहस व धैर्य प्रदान किया है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि, मैं दसवीं की बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करूँगा और मुझे इतने बड़े मंच से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त होगा। मैं पिछली परीक्षाओं में कक्षा एक से कक्षा 9 तक औसत श्रेणी का बच्चा रहा हूँ। समाज के ताने, उपहास और उपेक्षाओं के कारण मैं कुंठित होकर आंतरिक रूप से टूट चुका था। कुंठित होने की कारण मेरी संज्ञानात्मक और मानसिक स्थिति कमजोर हो चुकी थी। यद्यपि मेरे पिताजी सदैव मुझे प्रोत्साहित करते रहते थे। मुझसे कहते थे कि, शिक्षा ऐसी कुंजी है जिससे सामान्य और साधारण मनुष्य भी महान बन सकता है। तुम पढ़-लिख कर सामर्थ्यवान बनो। अपनी समस्याओं को चुनौती के रूप में स्वीकार करो और धैर्यपूर्वक सघंर्ष करो। लेकिन समाज, स्कूल, कक्षा, शिक्षक और छात्र इत्यादि की उपेक्षाओं के समक्ष उनका प्रोत्साहन कमजोर पड़ जाता था। जिसके कारण मैं स्वयं को असहाय और हीन महसूस करता था।

पिछले साल मेरे स्कूल में टॉप करने वाले छात्र को विद्यालय प्रशासन की तरफ से विधिवत् रूप से सम्मानित किया गया। जिसमें शहर के कई बड़े और नामी लोग सम्मिलित हुए और सभी ने उसकी खूब तारीफ की। इतना ही नहीं, टीवी पर मैंने देखा कि प्रदेश में बोर्ड परीक्षा में टॉप करने वाले छात्र का सम्मान मुख्यमंत्री जी ने किया। मैं बचपन से उपेक्षित था, मुझे लगा कि यदि मैं भी बोर्ड की परीक्षा में टॉप कर जाऊँ तो, मुझे सम्मानित होने का अवसर प्राप्त होगा। मुझे समाज में उपेक्षा और उपहास की बजाय सम्मान और प्यार मिलेगा। मेरे पिताजी भी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। बस फिर क्या था, मैंने उसी दिन शपथ ली कि, इस बार मैं बोर्ड परीक्षा में स्कूल नहीं, जिले में नहीं, पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करूँगा। जिससे मेरा सम्मान प्रदेश स्तर पर होगा और मेरे जैसे गरीब और विकलांग बच्चों को प्रेरणा मिल सकेगी। जो समाज में उपेक्षित और उपहास के पात्र हैं, उनके प्रति समाज का नजरिया भी बदल सकेगा। यदि मेरे कारण समाज के कुछ लोगों का भी नजरिया बदल सका, तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

बस फिर क्या था, लक्ष्य प्राप्ति के लिए मैं पढ़ाई में जी-जान से जुट गया। यद्यपि मेरे पास संसाधन सीमित थे। मेरे साथ पढ़ने वाले बहुत सारे बच्चे अच्छे घरों से थे, जो साधन सम्पन्न थे। स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त उनके पास बेहतरीन कोचिंग क्लास और अच्छी पुस्तकों व पाठ्य सामग्री के विकल्प थे। इसके अतिरिक्त कक्षा में शिक्षकों का ध्यान भी उनके प्रति रहता था। मैं कक्षा में उपेक्षित और बैक बेंचर हुआ करता था। लेकिन मुझमें और उनमें एक बहुत बड़ा अंतर था। मेरा

लक्ष्य बोर्ड परीक्षा टॉप करने का था जबकि उनका लक्ष्य अच्छा अंक हासिल करना था। मैं आंतरिक रूप से प्रेरित था, जबकि उन्हें उनके माता-पिता और शिक्षक प्रोत्साहित करते थे। मैंने अपने सपने को साकार करने के लिए दिन-रात एक किया था। कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाले टापिक मैं सीधे आत्मसात कर लेता था। इतना ही नहीं खाते-पीते, सोते-जागते, दिन-रात, हर पल मुझे सिर्फ और सिर्फ मेरे विषय गणित, अंग्रेजी, विज्ञान इत्यादि के विभिन्न चैप्टर और बोर्ड परीक्षा के प्रश्न और उनके उत्तर नजर आते थे। कक्षा में बच्चे स्कूल के सेमेस्टर एग्जाम, प्री बोर्ड एग्जाम इत्यादि में व्यस्त रहते थे। मैं इन सब बातों की परवाह किये बिना सिर्फ और सिर्फ बोर्ड के फाइनल एग्जाम की तैयारी के लिए पढ़ाई करता था।

मुझ पर कोई फर्क नहीं था कि, टर्म एग्जाम में मेरे कितने नंबर आए? मैं बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्रों के आधार पर तैयारी कर रहा था। प्री बोर्ड एग्जाम में मेरे नंबर कम आए तो टीचर ने मुझसे कहा कि, तुम्हें परीक्षा देने से वंचित कर दिया जाएगा। मैं प्रिंसिपल के समक्ष बहुत गिड़गिड़ाया और निवेदन किया कि, आप मुझे बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित होने दे, मैं परीक्षा में अच्छे अंक लाऊंगा। किसी तरीके से प्रिंसिपल सर ने मेरी शारीरिक अक्षमता को देखकर दया कर परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति दी। उन्हें क्या पता था कि, यह लड़का स्कूल का नाम रोशन करेगा। पहले मेरी राइटिंग बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन मुझे पता था कि परीक्षा में टाप करने के लिए राइटिंग सुधारना होगा। मैंने राइटिंग सुधारने के लिए पिछले एक साल बहुत मेहनत की, आज मुझे गर्व है कि मेरी राइटिंग सबसे अच्छी है।

किसी परीक्षा में टाप करने के लिए आपका पाठ्यक्रम पर अधिकार होने के साथ-साथ परीक्षा में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर लिखने की कला हासिल होनी चाहिए। पिछले वर्षों में बोर्ड परीक्षा में पूछे गए लगभग सभी

प्रश्न मेरे दिमाग में घूमते रहते थे। मैं उनका सर्वोत्तम उत्तर सोचता रहता था। उत्तर लिखकर पिताजी को दिखाता और स्वयं उनमें संशोधन करता रहता था। कभी मेरी हिम्मत नहीं हुई कि, मैं उन प्रश्नों के उत्तर शिक्षक को दिखा सकूं। कभी-कभी मैं निराश भी हो जाता था कि, इतना बड़ा लक्ष्य मैं कैसे हासिल कर पाऊंगा? लेकिन मेरे पिताजी मुझे सदैव प्रेरित करते रहते थे कि, तुम कर सकते हो। 'कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं, जीता वही जो डरा नहीं' इसी मंत्र का जाप करते हुए मैं धैर्यपूर्वक लक्ष्य की दिशा में अग्रसर होता रहा। आप कुछ भी कर सकते हैं, बस आप ठान लें। आपको आपकी मंजिल अवश्य मिलेगी। बस जरूरत है, विषम और विपरीत परिस्थितियों में धैयपूर्वक लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहने की। जितनी बड़ी आपकी समस्या और चुनौती है, आपको उतनी बड़ी सफलता मिलेगी। सफलता, समस्या और चुनौतियों के समानुपाती होती हैं।

मैं सामान्य छात्रों के अतिरिक्त विकलांग और दिव्यांग छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत हूँ। मैं हर छात्र से यही कहना चाहूंगा कि, आप अपने लक्ष्य को निर्धारित कर उस दिशा में सतत प्रयासरत रहें। आखिर में मैं आपसे यही कहना चाहूंगा कि, आप अपने आसपास, समाज की बातों की परवाह किए बगैर, सकारात्मक दृष्टिकोण से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों और सतत प्रयासरत रहें। ईश्वर सदैव आपके साथ हैं। समाज के अधिकाशः लोग आपको पीछे धकेलने का प्रयत्न करेंगे, कुछ ही लोग आपको प्रेरित करेंगे। पंडाल में उपस्थित सभी लोगों से मेरा निवेदन है कि, यदि आप मुझे कुछ दे सकते हैं तो सिर्फ इतनी कृपा करिएगा, जीवन में कभी भी कोई दिव्यांग व्यक्ति या बालक मिले तो उसकी उपेक्षा और उपहास करने के बजाय उसका सहयोग करें। आपके चंद पलों के आनन्द के चक्कर में वह बेचारा असहनीय मानसिक पीड़ा से गुजरता है। ईश्वर ने उसे शारीरिक रूप से अपंग बनाया है लेकिन आपके व्यवहारों से वह मानसिक रूप से अपंग हो जाता है। कोई भी व्यक्ति जानबूझकर विकलांग नहीं बनता है। यह ईश्वर प्रदत्त है और ऐसी स्थिति किसी के साथ, कभी भी हो सकती है। इसी के साथ मैं आप सभी का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। यदि मैंने कुछ गलत कहा हो, तो उसके लिए माफी चाहूंगा।

पूरे पांडाल में तालियों की गड़गड़ाहट गूंजने लगी। अधिकांश लोगों की आँखें नम थीं।

- जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी, कमरा नं. 24-25,
मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय, तालाब चौराहा,
हाथरस-204102 मोबाइल : 9451128482

असली हीरो

सूर्यलता जायसवाल

दीपक की ड्राईंग बहुत अच्छी थी। वह हमेशा नयी-नयी पेंटिंग्स बनाने में जुटा रहता। चित्रकला की कई प्रतियोगिताओं में वह प्रथम पुरस्कार भी जीत चुका था।

दीपक का मन दूसरे विषयों की पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। गणित और अंग्रेजी में तो वह बहुत मुश्किलों से पास हो पाता था। उसके मम्मी-पापा और स्कूल के टीचर उसे समझा-समझा कर हार गये । किन्तु वह दूसरी किताबों को हाथ ही नहीं लगाना चाहता था ।

इस बार छुट्टियों में उसके पापा ने दक्षिण भारत घूमने का प्रोग्राम बनाया था। दीपक वहां की प्रसिद्ध इमारतों के चित्र बनाना चाहता था। इसलिये उसने पेंटिग के सामान अपने साथ रख लिये। ट्रेन आने पर सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये।

ट्रेन ने चलना शुरू ही किया था कि दीपक ने देखा एक युवक बहुत तेजी से दौड़ता हुआ चला आ रहा है। दीपक को लगा कि उसकी ट्रेन छूट जायेगी। लेकिन वह युवक दीपक के डिब्बे में चढ़ गया। अपना ब्रीफकेस रख कर वह दीपक की सामने वाली सीट पर बैठ गया। तेज दौड़ने के कारण उसकी साँस फूलने लगी थी और उसके माथे पर पसीना छलक आया था।

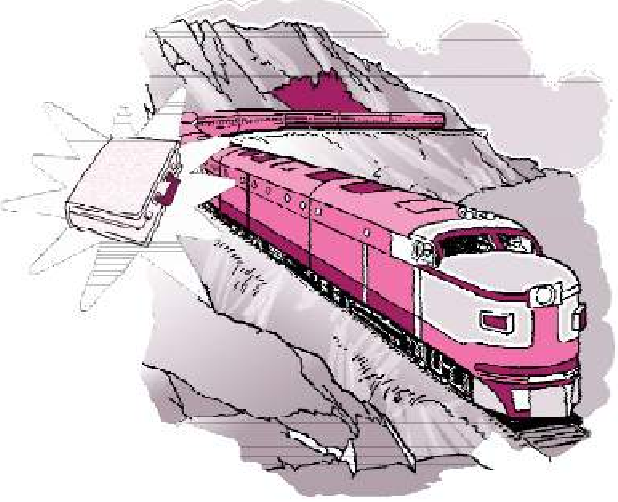

"भैया, अगर आप समय से घर से चले होते तो इतना परेशान न होना पड़ता" दीपक ने कहा।

"हां, तुम ठीक कहते हो" उस युवक ने रुमाल से पसीना पोंछते हुये कहा।

"आपका रिजर्वेशन किस सीट पर है?" दीपक ने परिचय बढ़ाने की दृष्टि से पूछा।

"मुझे बस 2-3 स्टेशन तक ही जाना है। इसलिये रिजर्वेशन नहीं करवाया" उस युवक ने सूखे स्वर में कहा और फिर दूसरी तरफ देखने लगा। ऐसा लग रहा था कि वह बात-चीत नहीं करना चाहता है।

आधे घंटे बाद ट्रेन दूसरे स्टेशन पर रुक गयी। वह युवक उठ कर डिब्बे से नीचे उतरा और तेज कदमों से बाहर की ओर चल दिया। दीपक को उसकी तेजी अजीब सी लगी। किन्तु उसने सोचा कि शायद वह कोई सामान लेने बाहर जा रहा हो।

थोड़ी देर बाद ट्रेन चल दी लेकिन वह युवक वापस नहीं लौटा। अचानक दीपक की दृष्टि सामने वाली सीट पर रखे उसके ब्रीफकेस पर पड़ी तो उसके दिमाग में खतरे की घंटी बजने लगी।

वह चिल्लाया,"पापा, वह आदमी अपना ब्रीफकेस यहां छोड़ कर भाग गया है। इसमें जरूर कोई गड़गड़ है।"

"तुम इतना परेशान क्यूं हो रहे हो। हो सकता है कि वह अपना सामान गल्ती से भूल गया हो" पापा ने समझाया।

"नहीं पापा, उसने बताया था कि उसे 2-3 स्टेशन दूर जाना है लेकिन वह पहले स्टेशन पर ही उतर गया है। इसके अलावा वह दौड़ते हुये डिब्बे में चढ़ा था और लगभग दौड़ते हुये ही बाहर गया है। मुझे तो कोई गड़गड़ लग रही है" दीपक तेज स्वर में बोला।

"क्या गड़बड़ हो सकती है?" मम्मी ने पूछा।

"इसमें बम हो सकता है। आप लोग जल्दी से ट्रेन रुकवाइये" दीपक चिल्लाया। उत्तेजनावश उसकी साँस फूलने लगी थी।

बम की बात सुनते ही पूरे डिब्बे में हड़बड़ाहट फैल गयी । औरतें और बच्चे तो रोने लगे ।

''ट्रेन रुकवा दें और इसमें बम न हुआ तो?'' एक आदमी ने टोका ।

''तो थोड़ी परेशानी अवश्य होगी'' दीपक ने उनकी ओर देखा फिर बोला, ''लेकिन अगर इसमें बम हुआ तो सोचिये कितनी परेशानी होगी ।''

दीपक की बात में दम था। उस आदमी ने पहले ट्रेन की जंजीर खींची फिर अपने मोबाईल पर पुलिस को खबर करने लगा ।

ट्रेन की गति काफी बढ़ गयी थी। इसलिये उसे रुकने में समय लग रहा था । इस बीच एक नौजवान ने हिम्मत दिखाते हुये उस ब्रीफकेस को उठाया और डिब्बे से बाहर उछाल दिया ।

'धड़ाम' ब्रीफकेस के बाहर गिरते ही तेज धमाका हुआ। जहां पर ब्रीफकेस गिरा था वहां एक बड़ा सा गड्ढा बन गया था। धमाके के कारण ट्रेन की कई खिड़कियों के शीशे टूट गये थे । इससे कुछ यात्रियों को मामूली चोटें लग गयी थीं । अगर यह बम ट्रेन के भीतर फटा होता तो क्या होता? सोच कर सभी के कलेजे कांप उठे ।

ट्रेन रुक गयी थी। थोड़ी ही देर में पुलिस आ गयी। पूरी बात समझ पुलिस इंस्पेक्टर ने दीपक से पूछा, ''बेटा, क्या तुम बता सकते हो कि उस आतंकवादी का चेहरा कैसा था ?''

''अंकल, मुझे ड्राईंग में कई पुरस्कार मिल चुके हैं। अगर आप कहें तो मैं उसका चित्र बना सकता हूं । आप उसे टी.वी. पर दिखवा दीजियेगा'' दीपक ने कहा।

इंस्पेक्टर, दीपक और उसके मम्मी-पापा को लेकर पुलिस स्टेशन आ गया। दीपक ने वहां पेंटिंग का सामान निकाला और आतंकवादी का चित्र बनाने में जुट गया । थोड़ी ही देर में उसका चित्र तैयार हो गया।

पापा ने जब चित्र देखा तो चीख पड़े, ''हां, वह आदमी बिल्कुल ऐसा ही था। इंस्पेक्टर साहब जल्दी पकड़वाइये उसे वरना वह जाने कितने लोगों की जान ले लेगा ।''

इंस्पेक्टर ने चंद मिनटों के भीतर उस चित्र को टी.वी. पर दिखलवा दिया। आतंकवादी को सपने में भी उम्मीद न थी कि आधे घंटे के भीतर उसका चित्र टी.वी. पर आ जायेगा। जिस होटल में वह ठहरा था उसके कर्मचारियों ने उसे पहचान लिया। थोड़ी ही देर में पुलिस ने उसे तीन अन्य आतंकवादियों के साथ गिरफ्तार कर लिया । उनके पास से कई बम बरामद हुये। अगले 2 दिनों में उनकी कई शहरों में धमाके करने की योजना थी । दीपक की सूझबूझ से उनकी योजना पर पानी फिर गया ।

अगले दिन के समाचार पत्र दीपक की बुद्धिमानी की खबर से भरे हुये थे। सरकार की ओर से जिलाधिकारी ने दीपक के स्कूल में आकर उसे एक लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया ।

''दीपक, कैसा लग रहा है ?'' प्रिंसिपल साहब ने कार्यक्रम के बाद पूछा ।

''सर, बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन एक बात का अफसोस है'' दीपक ने कहा ।

''कैसा अफसोस ?''

''हमारी ट्रेन छूट गयी । हम लोग घूमने नहीं जा पाये'' दीपक ने बताया ।

''उसकी चिंता मत करो । स्कूल के प्रबंधकों ने तुम्हारे परिवार के लिये हवाई जहाज का टिकट मंगवा लिया है। तुम आराम से घूमने जा सकते हो'' प्रिंसिपल साहब ने अपनी जेब से टिकट निकाल कर दीपक के हाथ पर रख दिया ।

टिकट देख दीपक की आँखें खुशी से चमक उठीं। तभी प्रिंसिपल साहब ने स्नेह से उसकी पीठ थपथपायी फिर बोले,''दीपक, मुझे भी एक बात का अफसोस है ।''

''किस बात का ?''

''कुछ दिनों बाद अखबार में तुम्हारी फोटो दोबारा छपने वाली है ।''

''मेरी फोटो दोबारा क्यूं छपेगी ?'' दीपक आश्चर्य से भर उठा ।

''जब अखबार वालों को पता चलेगा कि आंतकवादियों को पकड़वाने वाला हीरो आर्ट के अलावा दूसरे सभी विषयों में फेल हो गया है। तो क्या वह दोबारा तुम्हारी फोटो नहीं छापेंगे?'' प्रिंसिपल साहब ने दीपक की ओर देखा ।

यह सुन दीपक का चेहरा उतर गया। प्रिंसिपल साहब ने पूछा, ''बताओ, क्या मेरी बात गलत है?''

''सर, आपकी बात तो सही है पर मैं इसे गलत साबित कर दूंगा'' दीपक का स्वर अचानक ही गंभीर हो गया ।

''वह कैसे ?''

''मेरी फोटो दोबारा छपेगी लेकिन इस खबर के साथ कि मैंने सभी विषयों में टाप किया है । भले ही इसके लिये मुझे दिन-रात मेहनत क्यों न करनी पड़े'' दीपक की आँखें आत्मविश्वास से चमक उठीं ।

''शाबाश, मुझे अपने हीरो से यही उम्मीद थी '' प्रिंसिपल साहब ने उसे गले से लगा लिया ।

घूम कर वापस आने के बाद दीपक जी-जान से पढ़ाई में जुट गया । उसे असली हीरो जो बनाना था ।

- सी-5300, सेक्टर-12, राजाजीपुरम, लखनऊ-226017

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर

शंकर लाल माहेश्वरी

'मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ भी किया है वह बेहद मुसीबतों, अत्यन्त दुखों और बेशुमार विरोधियों का मुकाबला करके किया है। यह कारवां आज जिस जगह पर है उस जगह पर मैं इसे बड़ी मुसीबतों के साथ लाया हूँ। तुम्हारा कर्तव्य है कि कारवां सदा आगे ही बढ़ता रहे, बेशक कितनी ही रुकावटें क्यों न आवें।'

यह कथन है सदियों से शोषित, प्रताड़ित, उपेक्षित, दलित, अछूत एवं अन्त्यज तथा अस्वस्थ व तिरस्कृत परिवार में जन्में पले-बड़े हुए भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के। जिन्होंने आजीवन दलितोद्धार एवं समाजसेवा में संलग्न रहकर सामाजिक विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म दिनांक 14 अप्रैल 1891 में महु नगर में महार परिवार में रामजी सकपाल की चौदहवीं सन्तान के रूप में हुआ। जब भीमराम पाँच वर्ष के थे तभी माता भीमा बाई का देहान्त हो गया और चाची मीरा बाई के संरक्षण में बालक भीमराव का पालन-पोषण हुआ। चाची प्यार से इन्हें भीवां नाम से सम्बोधित करती थी। इसीलिए कालान्तर में वे भीमराव रामजी अम्बेडकर के नाम से प्रख्यात हुए। सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से इनका विवाह हुआ और बाद में पिता के साथ बम्बई पहुँच कर एलकिन्सन्टन स्कूल में प्रवेश लिया। सन् 1912 में मैट्रिक के बाद बी. ए. करने पर बड़ौदा महाराजा ने अपनी फौज में लेफ्टिनेंट पद पर नियुक्त किया। सन् 1935 में उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। जिसका उद्देश्य था देशवासियों को हर संभव समानता का अधिकार दिलाना। स्वराज्य हर भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है अतः अछूत और दलितों को भी समाज में समानता के साथ जीवन यापन का अधिकार है।

सन् 1946 में अंतरिम सरकार बनी। डॉ. अम्बेडकर उस समय मंत्रिमण्डल में प्रथम कानून मंत्री बने और संविधान के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया। संविधान में यह स्पष्ट किया गया कि देश के प्रत्येक नागरिक को सभी अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं। स्त्री, पुरुष, धर्म, जाति किसी भी प्रकार के भेदभाव न रखते हुए सभी वर्ग समानता के अधिकार का उपभोग कर सकते हैं। समाज में व्याप्त छूआछूत को कानूनन अपराध घोषित किया गया।

डॉ. अंबेडकर ने दलित वर्ग पर होने वाली यातनाओं को नजदीक से देखा और स्वयं ने बचपन से ही उन्हें भोगा था। तभी से अछूतोद्धार का सपना साकार करने के लिए तत्परता के साथ योजनाबद्ध ढंग से कार्य प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है - 'मेरे स्कूल में एक मराठा जाति की महिला नौकर थी। वह स्वयं अशिक्षित थी लेकिन वह सदैव छुआछूत मानती थी। मुझे छूने से बचती थी। मुझे याद है एक दिन मुझे बहुत प्यास लगी। नल को छूने तक की मुझे स्वीकृति नहीं थी। मैंने मास्टर जी से कहा कि मुझे पानी चाहिए। उन्होंने चपरासी को आवाज देकर नल खोलने को कहा। चपरासी ने नल खोला और तब मैंने पानी पिया। यदि चपरासी अनुपस्थित होता तो मुझे प्यासा ही रहना पड़ता।' डॉ. अम्बेडकर को सामाजिक जीवन में भी कई यातनाएँ सहन करनी पड़ीं। जब वे बड़ौदा में सैनिक सचिव के रूप में पहुँचे तो आपको लेने कोई नहीं आया। रहने के लिए जगह नहीं दी गई। होटल में स्थान नहीं मिला। किराये का मकान भी नहीं मिल सका, कार्यालय के कर्मचारी अपमानजनक व्यवहार करने लगे। पीने का पानी उपलब्ध न होना। इन समस्त अपमानजनक स्थितियों के कारण उन्हें नौकरी तक छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। ऐसी दयनीय स्थिति में दृढ़ संकल्प किया कि मुझे भयानक अत्याचारों से पीड़ित दलितों के उत्थान के लिए प्रत्यक्ष रूप से कुछ कार्य करना चाहिए जिससे कि युगों-युगों से पीड़ित, प्रताड़ित, पद दलित वर्ग का उद्धार हो सके और ऐसी यातनाओं से मुक्ति मिले।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सन् 1923 में डॉ. ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त की। बम्बई हाइकोर्ट में वकालत प्रारम्भ की। उसी समय विधान परिषद के सदस्य मनोनीत किये गये। 27 फरवरी 1927 में बम्बई विधान परिषद में इनके भाषण ने सभी की आँखे खोल दीं। लोगों को ऐसा लगा कि दलितों के लिए कोई सशक्त प्रतिनिधि देश में पैदा हो गया है। डॉ. साहब ने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अप्रैल सन् 1927 में एक मराठी पत्र पाक्षिक 'बहिष्कृत भारत' का भी प्रकाशन किया। स्वतंत्र मजदूर पार्टी का गठन किया। सन् 1942 में शिड्युल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना की। दलित और शोषित वर्ग के उद्धार तथा उनके लिए समर्पित सेवा भावना से प्रभावित होकर तत्कालीन भारत के वायसराय ने नये हिन्द की कार्यकारिणी में कौंसिल रिबर्ट मेम्बर के पद पर नियुक्ति प्रदान की। इसके बाद बाबा साहब ने दलितों, स्त्रियों, मजदूरों, किसानों और अछूतों को उनके अधिकार दिलाने में सक्रिय होकर समाजोत्थान का बीड़ा उठाया। इस कार्य के लिए उन्होंने अत्याचारों से मुक्ति के लिए तीन सूत्र प्रस्तुत किए - 1. शिक्षित बनो 2. संगठित बनो 3. संघर्ष करो। उनकी मान्यता थी कि अपमानित होकर जीवित रहने से तो दो पल स्वाभिमान का जीवन ज्यादा अच्छा है।

डॉ. अंबेडकर सर्वधर्म समभाव का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए कहते हैं -

- धर्म नैतिकता की दृष्टि से प्रत्येक धर्म का मान्य सिद्धान्त है।
- धर्म बौद्धिकता पर टिका होना चाहिए जिसे दूसरे शब्दों में विज्ञान कहा जा सकता है।
- इसके नैतिक नियमों में स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृभाव का समावेश हो।

जब तक सामाजिक स्तर पर धर्म में ये तीन गुण विद्यमान नहीं होंगे धर्म का विनाश हो जायेगा।

29 अगस्त 1947 ईस्वी में भारत स्वतंत्रता कानून पारित हुआ तथा इसी दिन संविधान सभा ने संविधान प्रारूप समिति की नियुक्ति की। जिसमें डॉ. अम्बेडकर को प्रथम कानून वेत्ता को आधुनिक भारत में समाज के लिए संविधान रूपी शिल्पी नियुक्त किया गया। 26 जनवरी 1949 में संविधान का तीसरा पठन समाप्त हुआ और संविधान को पारित कराया गया।

डॉ. अंबेडकर को 15 अगस्त 1947 में देश के स्वतंत्र होने पर जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में बनी सरकार में प्रथम कानून मंत्री बनाया गया और बाद में किन्हीं मतभेदों के कारण सन् 1951 में बाबा साहब ने त्याग पत्र दे दिया। सन् 1952 में बाबा साहब राज्य सभा के सदस्य भी रहे। 05 जून 1952 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में एक दीक्षान्त समारोह में विधि ज्ञान के सम्मानार्थ एल-एल.डी. की उपाधि से विभूषित किया गया

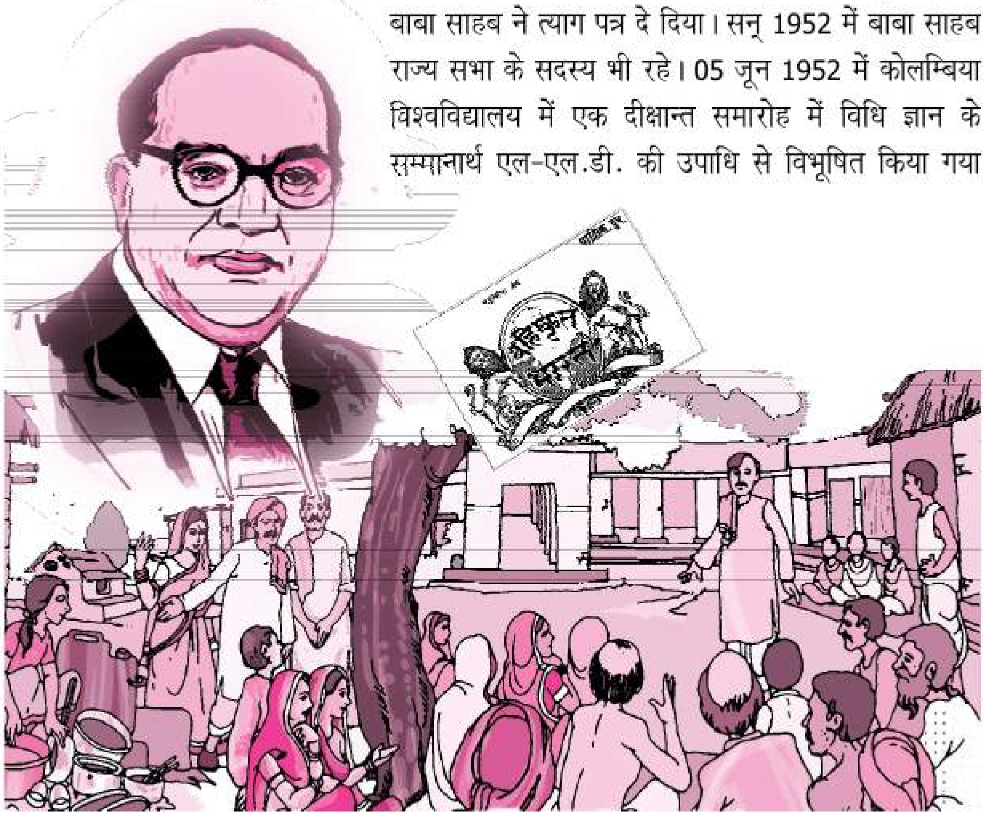

तथा सम्मान व्यक्त करते हुए कहा गया 'डॉ. भीमराव अंबेडकर भारत के ही नहीं विश्व के महान नागरिक हैं, वह एक समाज सुधारक होने के साथ ही महान मानवतावादी तथा मानव अधिकारों के प्रबल पक्षधर भी हैं।'

बाबा साहब ने 14 अक्टूबर 1956 में लगभग 6 लाख लोगों के विशाल जन समुदाय के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकों में प्रमुख हैं - बुद्ध एण्ड कार्ल मार्क्स, रिवोल्यूशन एण्ड काउण्टर, रिवोल्यूशन इन इंडिया, द रीडियस ऑफ हिन्दूज्म, द केस ऑफ अनटचेबल, द रिव्यूलेशन इनएन्सेंट इण्डिया, द बुद्ध एण्ड हिज धम्म आदि।

बाबा साहब सही अर्थों में एक महामानव सच्चे देशभक्त थे। समाज सुधारक के रूप में अनवरत आजीवन संलग्न रहे। निश्चय ही वे समाज के प्रेरणास्रोत, सामाजिक प्रगति के अग्रदूत, मौलिक अधिकारों के प्रणेता, समाजवादी विचारधारा के पोषक एवं राष्ट्रीय एकता के नियामक के रूप में सेवारत रहते हुए समाज व राष्ट्र की प्रगति के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करते रहे। महामानव विश्व विभूषण नर पुंगव भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जीवन पर्यन्त संघर्षशील रहे और नारी जाति, दलित वर्ग, किसान, मजदूर आदिवासी तथा समाज के अधिकारों की रक्षा तथा उनकी शिक्षा और प्रगति के लिए आजीवन संलग्न रहे। समाज सेवा का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करते हुए 6 दिसम्बर 1956 में आप देवलोक सिधार गये।

बाबा साहेब के निधन का शोक प्रकट करते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था 'डॉ. अंबेडकर ने हिन्दू समाज के सभी दमनकारी तत्वों के विरोध में बगावत की। असल में यह बगावत हम सबको करनी चाहिए थी भारत के संविधान के रचयिता बाबा साहब हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी दलितों, अछूतों के प्रति समर्पित सेवा भावना को भुलाया नहीं जा सकता। वे प्रकाण्ड विद्वान होने के साथ ही उच्चकोटि के वक्ता थे। उनकी राष्ट्रीय सेवा हमें समता, अखण्डता, समानता तथा भाईचारा का संदेश हमेशा देती रहेगी।'

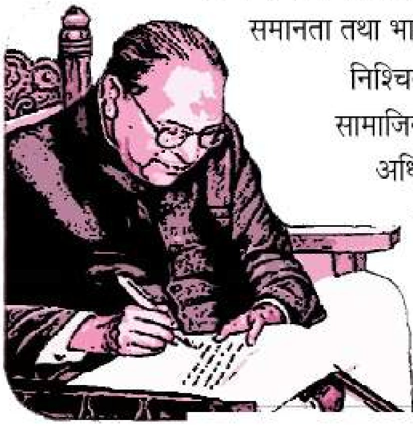

निश्चित रूप से बाबा साहब समाज के प्रेरणास्रोत थे। उनका दर्शन सामाजिक चिन्तन पर ही आधृत था। सामाजिक समानता, मौलिक अधिकार, मानवीय न्याय, समाजवाद तथा देश की अखण्डता के लिए संघर्षरत रहते हुए उन्होंने अपने प्राणों की आहूति दी जो भावी पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप में सदैव आलोकित करेगी।

- पोस्ट-आगूचा, जिला-भीलवाड़ा राजस्थान
पिन-311022 मोबाइल : 09413781610

दादा

राजकुमार सचान

मोटे तगड़े मेरे दादा
रहते सबको घेरे दादा
बड़ी दूर तक पैदल जाते
जगते खूब सबेरे दादा

हमको रोज पढ़ाते दादा
सब पर रौब जमाते दादा
पापा सबको डाँटें लेकिन
पापा को हड़काते दादा

मुद्दे नये उठाते दादा
कब क्या हो समझाते दादा
धीरे-धीरे दादी से ही
जाने क्या बतियाते दादा

चाचा को धमकाते दादा
सारे काम कराते दादा
चाय चाहिए जब भी उनको
बहू-बहू चिल्लाते दादा।

मोटू भाई

फँसे जाम में मोटू भाई
नानी याद उन्हें तब आई

आगे गाड़ी पीछे गाड़ी
जमी धूल कपड़ों से झाड़ी
तेज धूप बह चला पसीना
किया धुएँ ने मुश्किल जीना

पड़ा रास्ता नहीं दिखाई
फँसे जाम में मोटू भाई

रेंग-रेंग कर वाहन चलते
आगे पीछे थोड़ा हिलते
खाये खूब भीड़ के धक्के
मोटू अपने हक्के-बक्के

हुई समस्या ये दुखदाई
फँसे जाम में मोटू भाई

भारी भरकम पेट कहे
और कहाँ तक भूख सहे
हमें चाहिए मन भर खाना
ऐसे शहर भूल नहिं आना

यहाँ न मट्ठा दूध मलाई
फँसे जाम में मोटू भाई।

- 421, गुंजन विहार, बर्रा-6, कानपुर-208027 (उ.प्र.) मोबाइल : 9044818353

भोंदू और तरबूजा

चन्द्रमोहन दिनेश

एक बार तरबूजा लेकर भोंदू घर को आये
कहीं न उसका सिरा मिला तो भोंदू जी चकराये
पूरी तरह गोल तरबूजा कहीं सिरा न पाया
कैसे खाया जाय इसे अब, यही समझ न आया।

छोटू बोला 'भैया यह तो बहुत बड़ा और भारी
इसे कहाँ से ले आये तुम, यह तो विपदा भारी
कहीं न इसका मुँह दिखता है, कहीं न इसकी पूंछ
खाया यह कैसा जाता है, चल पापा से पूछ।'

'पापा तो गुस्सा ही होंगे अब उनसे क्या कहना
बड़ी मुसीबत गले हमारे, अब तो चुप ही रहना।
ऐसा करो, बीच में रखकर सब इस पर मुँह मारो
हिम्मत से सब काम संभलते, यह भी सोचो यारो।'

तरबूजे को बीच में रखकर सब ने बांह चढ़ायी
देख तमाशा बच्चों का यह, माँ भी दौड़ी आयी
आंगन में तरबूजा रखा, एक अकेला भारी
सभी गौर से देख रहे थे, उसको बारी, बारी।

तभी सबों ने साथ झपट कर एक साथ मुंह मारा
सिर टिकराये एक साथ, जब सबने मिल मुँह मारा
सिर सहला कर भोंदू बोला, 'भैया मैं भर पाया,
जाने कैसी बुरी घड़ी थी, जब इसको घर लाया।'

हाथ थक गये इस मोटे को, घर तक लाते, लाते
पता नहीं था, वरना इसको कभी नहीं घर लाते
पापा ही बतला सकते हैं, कैसे इसको खायें
बिना इजाजत घर ले आये, यह भी उन्हें बतायें।'

– रोशनगंज, शाहजहाँपुर-242001

यह छत्तीसगढ़ की आस्था का ही प्रताप है जो आज राजिम में हर बरस कुंभ मेले का आयोजन होता है। यहाँ महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों का संगम होता है। आइए हम आपको राजिम की कहानी सुनाते हैं। राजिम की कहानी प्रारंभ होती है महानदी से, जिसे चित्रोत्पला गंगा भी कहा जाता है।

राजिम की कहानी

चित्रकथा : परमात्मा प्रसाद श्रीवास्तव
मूलकथा : स्व० प्रेम साईमन

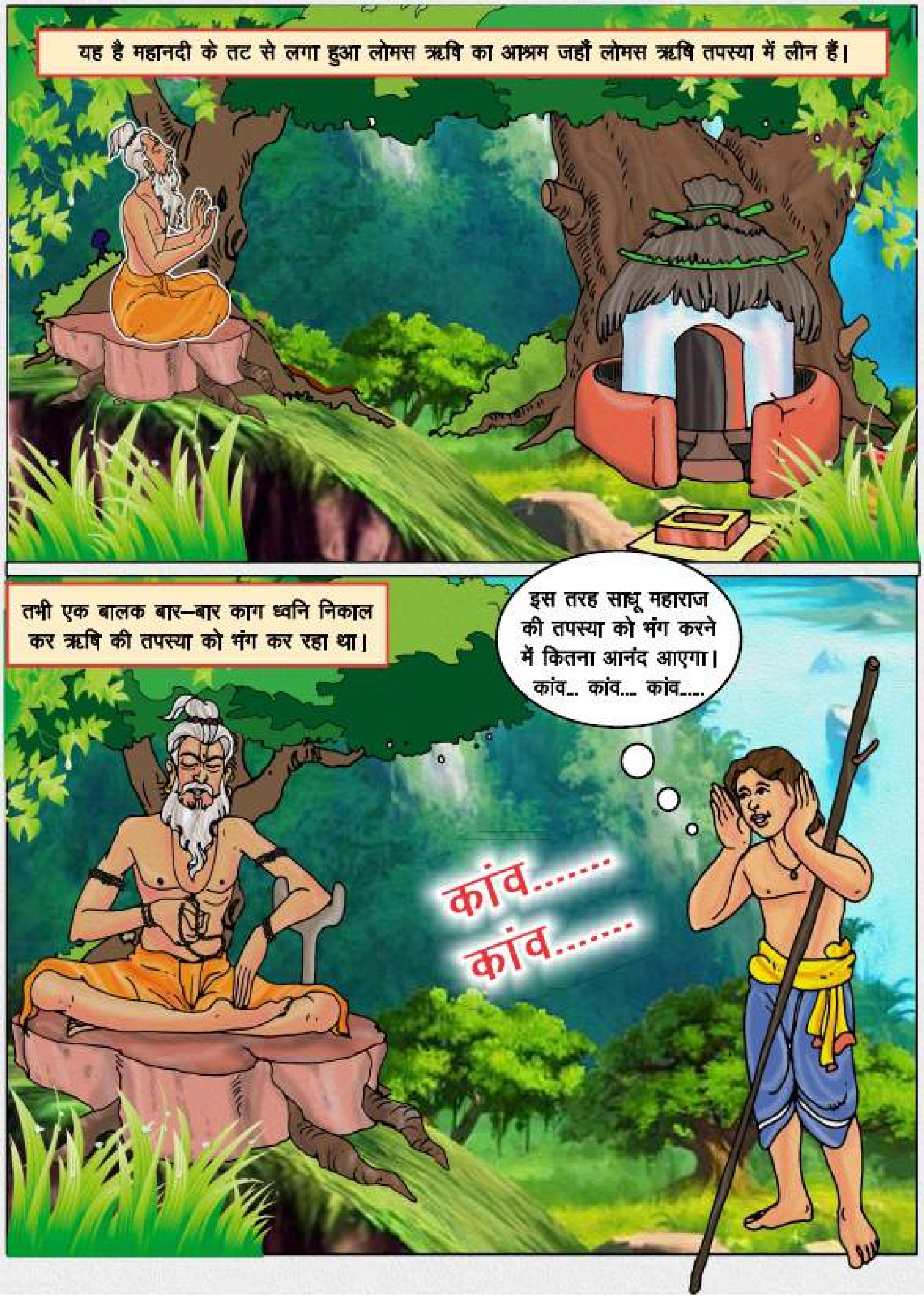
यह है महानदी के तट से लगा हुआ लोमस ऋषि का आश्रम जहाँ लोमस ऋषि तपस्या में लीन हैं।
तभी एक बालक बार–बार काग ध्वनि निकाल कर ऋषि की तपस्या को भंग कर रहा था।
इस तरह साधू महाराज की तपस्या को भंग करने में कितना आनंद आएगा। कांव.. कांव... कांव....
कांव.......
कांव.......

कुछ देर तक तो ऋषि ने उसे अनदेखा किया लेकिन जब बालक ने अपनी शरारत जारी रखी तो उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने बालक को श्राप दे दिया कि...
हे दुष्ट..!! काग ध्वनि से तूने मेरा ध्यान भंग कर दिया है। जा आज से तू सचमुच कौआ ही हो जाएगा।
ऋषि को श्राप का असर तुरंत दिखने लगा और बालक कौए के रूप में परिवर्तित होने लगा।
नहीं.............! मुझे क्षमा करें ऋषिवर......!!!
बालक भयभीत होकर क्षमा याचना करने लगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
थोड़ी ही देर में ऋषि का क्रोध शांत हो गया और ....
ओह, यह मैं क्या कर डाला, यह तो बच्चा है, नादान है और मैं ब्रह्मज्ञानी होकर भी...
कांव.. कांव... ऋषिवर, मैं क्षमा चाहता हूं, मुझे मुक्ति दो।

ऋषि का मन बदला, पर वे श्राप को नहीं बदल सकते थे...।
जाओ बालक, आज से लोग तुम्हें कागभुशुण्डि के नाम से जानेंगे और दिगंतों तक तुम्हारी यश और ख्याति रहेगी।
आभार ऋषिवर, अब यह भी बता दीजिए कि मुझे प्रभु के दर्शन और इस श्राप से मुक्ति कब मिलेगी।
यह तो हुई पुराणों की बात। महानदी के साथ एक और कहानी जुड़ी हुई है। राजिम तेलिन की कहानी। उसी राजिम तेलिन की जिसकी स्मृति में राजिम नगरी का नामकरण हुआ है।
ऋषि की जय हो.!
जब भगवान राम जनक नंदनी सीता के साथ इस अरण्य में पधारेंगे, तब तुम्हें कुलेश्वर मंदिर में उनके दर्शनों का सौभाग्य मिलेगा और मुक्ति भी मिलेगी।
राजिम बेटी, तेल बेचने के लिए जाने की तैयारी हो गई..?
हां, सासु मां, मैंने तेल की हांडी भर ली है।
एक छोटे से गांव में राजिम तेलिन रहती थी। वह बहुत सुन्दर, सुशील और मेहनती महिला थी। वह रोज तेल बेचने का कार्य करती थी। उसकी सास भी उसके गुणों के कारण उसे बहुत पसंद करती थी।

बेटी, बिना खाए नहीं जाना, बाहर बहुत धूप है।
जी, मां, खाना बन गया है, आपके लिए भी लगा दूं..?
तू मेरी चिंता मत कर, मैं थोड़ी देर बाद अपना काम निपटा के खा लूंगी। तू पहले खा और फिर तेल बेचने जा। और हां, रास्ते में अपना ख्याल रखना और घर जल्दी आना।
दोपहर तक राजिम का आधा तेल बिक जाता है और चलते–चलते उसका पांव किसी पत्थर से टकराता है.... और.......
हाय राम.....!
टकराने के बाद राजिम के हाथ से तेल की हांडी छूट जाती है और पूरा तेल जमीन पर फैल जाता है।

इससे पहले कि वह हांडी उठा पाती, तेल पूरा बह चुका था।
हे भगवान, यह क्या हो गया मुझसे..! अब इस नुकसान की भरपाई कैसे होगी..?
इसी चिंता में वह बैठकर हांडी को उठाकर पास ही पड़े पत्थर पर रखती है।
तभी अचानक चमत्कार होता है और हांडी तेल से भर जाती है।
राजिम मन ही मन भगवान को धन्यवाद देकर हांडी उठाकर गांव की ओर चल पड़ती है।
आज बहुत देर लग गई बेटा, अरे यह क्या..? हांडी पूरी भरी हुई है, आज तेल नहीं बिका क्या...?

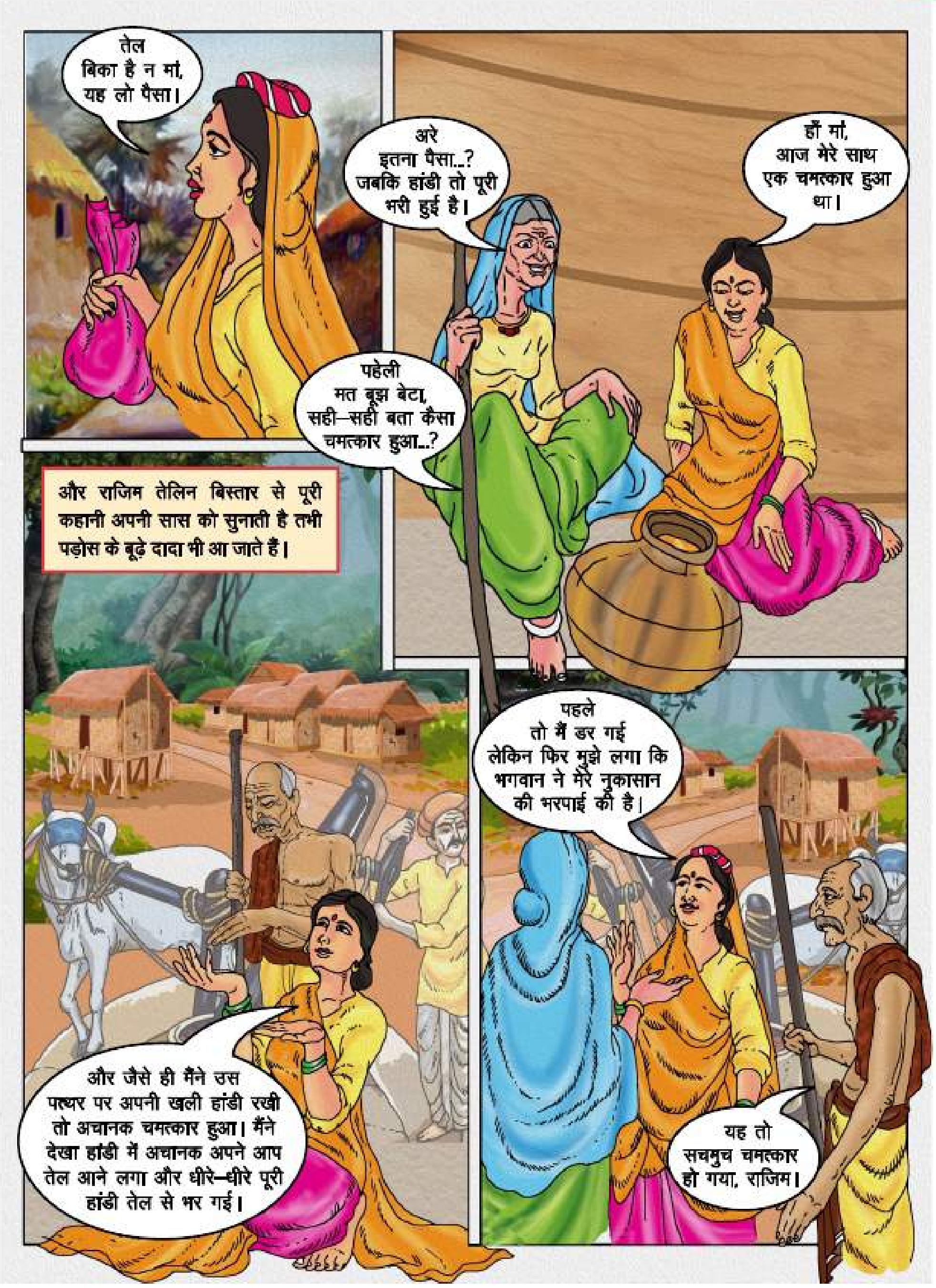
तेल बिका है न मां, यह लो पैसा।
अरे इतना पैसा...? जबकि हांडी तो पूरी भरी हुई है।
हाँ मां, आज मेरे साथ एक चमत्कार हुआ था।
पहेली मत बूझ बेटा, सही–सही बता कैसा चमत्कार हुआ...?
और राजिम तेलिन बिस्तार से पूरी कहानी अपनी सास को सुनाती है तभी पड़ोस के बूढ़े दादा भी आ जाते हैं।
पहले तो मैं डर गई लेकिन फिर मुझे लगा कि भगवान ने मेरे नुकसान की भरपाई की है।
और जैसे ही मैंने उस पत्थर पर अपनी खली हांडी रखी तो अचानक चमत्कार हुआ। मैंने देखा हांडी में अचानक अपने आप तेल आने लगा और धीरे–धीरे पूरी हांडी तेल से भर गई।
यह तो सचमुच चमत्कार हो गया, राजिम।

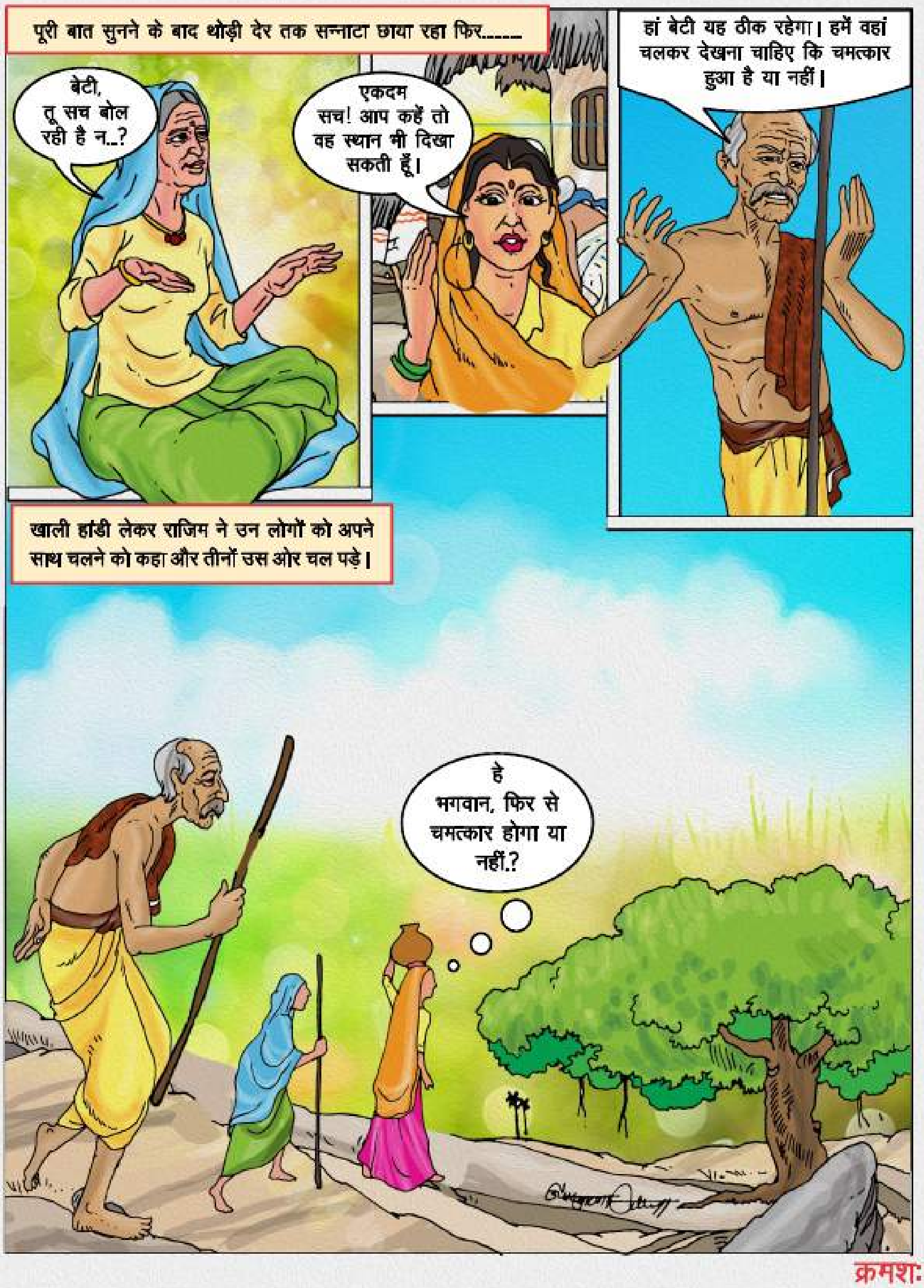
पूरी बात सुनने के बाद थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा फिर.....
बेटी, तू सच बोल रही है न..?
एकदम सच! आप कहें तो वह स्थान भी दिखा सकती हूँ।
हां बेटी यह ठीक रहेगा। हमें वहां चलकर देखना चाहिए कि चमत्कार हुआ है या नहीं।
खाली हांडी लेकर राजिम ने उन लोगों को अपने साथ चलने को कहा और तीनों उस ओर चल पड़े।
हे भगवान, फिर से चमत्कार होगा या नहीं.?

क्रमशः

नीलकमल

बहादुर चौहान

नीलकमल खिलकर
कीचड़ में
सौन्दर्य अपना दर्शाता है।
चढ़कर 'श्री' के चरणों में
गरिमा अपनी बढ़ाता है।।

सभी फूलों को पछाड़ कर
राष्ट्रीय फूल कहलाता है।
इस सुन्दर फूल का
भारत माता से नाता है।।

कीचड़ में भी हम
खिल सकते हैं,
नीलकमल यह बात बताता है।
जो खिलने की कोशिश नहीं करता
वह बहुत पछताता है।।

अब्दुल कलाम, शास्त्री की गाथा
पूरा देश गाता है।
जो कीचड़ में रहकर खिलना जाने
वही खूब हर्षाता है।।

ग्राम कोटियामान सिंह, पोस्ट सिऊवा (बांसगांव), जिला-गोरखपुर-273403 (उ.प्र.) मोबाइल : 9621601618

गिलहरी और टिटहरी

एक गिलहरी किट्टी, खाती नौ मन लिट्टी।
कौआ घूमे काशी, आती काली खांसी।
दिल्ली वाली बिल्ली, खेल रही है गिल्ली।
नटखट चुनमुन भैया, दूध पिलाती गैया।
भौं-भौं टामी कालू, खाता कच्चे आलू।
हरा-हरा है तोता, लगा रहा है गोता।
टिट-टिट टूं-टूं टिटहरी, दौड़ी-भागी ठहरी।
आई तभी गिलहरी, भागी देख टिटहरी।

शरारत

नटखट बन्दर घूम रहा था, लिए हाथ में कोड़ा।
तभी अचानक पड़ा दिखाई, घास चर रहा घोड़ा।
सोचा-सारी दिल्ली की मैं, जमकर करूं घुमाई।
आज बिना पैसों की मैंने, मुफ्त सवारी पाई।
पूँछ पकड़कर लगा बैठने, हुई तभी यह बात।
चारों खाने चित्त गिरा, घोड़े ने मारी लात।

दीपू सिंह

मक्का का भुट्टा

खालो-खालो गरम-गरम है, ये मक्का का भुट्टा।
साफ, दूधिया, नरम-नरम है, ये मक्का का भुट्टा।
तोड़ खेत से काका लाए, अभी-अभी है भूना।
इतना बढ़िया, स्वाद परम है, ये मक्का का भुट्टा।
दाने इसके दांत सरीखे, सजे देह में होते।
मेहनतकश किसान का श्रम है, ये मक्का का भुट्टा।

काली चिड़िया

काली चिड़िया चीं-चीं-चीं, दाना खाले, पानी पी।
बड़े सवेरे आती तू, मीठे गाने गाती तू।
जब मैं पास बुलाती हूँ, फर-फर-फर उड़ जाती तू।
चीनू-मीनू दो बच्चे, लगते हैं मुझको अच्छे।
इनको ले आ घर मेरे, संग में खेलेंगे मेरे।
दाना इन्हें खिलाऊँगी, और दूध पिलवाऊँगी।

ग्राम व पोस्ट : मनेथू वाया सरवनखेड़ा, जनपद : कानपुर देहात-209121 मोबाइल : 6388505598

जब-जब आता है रविवार

राम नरेश उज्ज्वल

जब-जब आता है रविवार।
बहुत सुहाता है रविवार।।
विद्यालय से छुट्टी देता,
मजे कराता है रविवार।
गुस्से वाले पापा से भी,
सदा बचाता है रविवार।
घर में पिकनिक के जैसा,
माहौल बनाता है रविवार।
मनमानी हम करें सदा, न
रोक लगाता है रविवार।
डाँट-डपट न घुड़की कोई,
खेल-खिलाता है रविवार।
चिन्ता मुक्त रहें हम दिन भर,
नहीं सताता है रविवार।
पापा-मम्मी को भी छुट्टी,
सदा दिलाता है रविवार।
बर्फी, रबड़ी, रसगुल्ले से,
ज्यादा भाता है रविवार।
कभी-कभी नाना के घर भी
हमें घुमाता है रविवार।
दादा-दादी के ही जैसा,
प्यार लुटाता है रविवार!

- मुंशी खेड़ा, पोस्ट-अमौसी एयरपोर्ट, लखनऊ-226009 मोबाइल : 7071793707

महान वैज्ञानिक
डॉ. मेघनाथ साहा

बबिता बसाक

6 अक्टूबर, 1893 पूर्वी बंगाल के (ढाका) शेबड़ाताली नामक छोटे से गाँव में जगन्नाथ साहा के घर जन्म हुआ बालक मेघनाथ का, जो आगे चलकर एक महान वैज्ञानिक बने और विख्यात हुए लोकप्रिय महान वैज्ञानिक डॉ. मेघनाथ साहा के नाम से।

मेघनाथ के पिता जगन्नाथ साहा अत्यन्त गरीब थे, गाँव में ही खिलौने व छोटी-मोटी चीजों की दुकान से अर्जित आमदनी से किसी तरह वे अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। आठ संतानों में मेघनाथ साहा उनकी 5वीं संतान थे। मेघनाथ साहा की माता बहुत ही कुशल महिला थीं। वे हमेशा ही अपने बच्चों को गरीबी से दूर रखने का यत्न करतीं और बच्चों को उच्च शिक्षा देना चाहती थीं। लेकिन गरीबी के कारण उच्च शिक्षा तो क्या, साधारण शिक्षा भी उनके बच्चों के लिए बहुत मुश्किल थी।

बचपन से ही मेघनाथ कुशाग्र व मेधावी बालक थे। उनकी प्रारंभिक पढ़ाई उन्हीं के गाँव के एक प्राथमिक पाठशाला में प्रारम्भ हुई। गरीबी के कारण बालक मेघनाथ सुबह पाठशाला में पढ़ाई करते और बाकी समय अपने पिता के काम में हाथ बँटाते ताकि वे पढ़ सकें। इतना ही नहीं वे नंगे पैर स्कूल जाते परन्तु अपनी पढ़ाई समय पर पूरा करते। उनकी पढ़ाई के प्रति अथाह रुचि और कौशल बुद्धि देखकर उनके मित्र और शिक्षक उनसे बहुत प्रभावित थे।

जब कुशाग्र मेघनाथ को गाँव से सात मील दूर सिसुलिया गाँव के मिडिल स्कूल में भर्ती कराया गया तभी उनके एक परिचित डॉ. दास ने मेघनाथ की अनेक प्रकार से सहायता की। वे बालक मेघनाथ को अपने घर ले आये बालक मेघनाथ उनके घर में रहने लगे, वहाँ रहकर मेघनाथ उनके घरेलू काम किया करते और साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी। बच्चो! आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जब वे पढ़ाई कर रहे थे तभी से उन्होंने अनेक चमत्कार किये। गणित में तो हमेशा से ही बहुत तेज थे। 1905 में मीडिल की परीक्षा में जब बैठे तो उत्तीर्ण ही नहीं, पूरे ढाका में वे अव्वल आये।

मीडिल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे ढाका के कॉलेजिएट में दाखिल हुए। अव्वल आने के

कारण उन्हें सरकारी छात्रवृत्ति मिलने लगी, साथ ही उनकी फीस भी माफ हो गई जिससे उनकी कुछ आर्थिक समस्या हल हो गई। ये देखकर वे बहुत खुश हुए और अधिक मन लगाकर अपने अध्ययन में लग गये। परन्तु युवावस्था तक आते-आते बालक मेघनाथ के समक्ष उनका लक्ष्य सिर्फ उनकी शिक्षा-दीक्षा ही नहीं, देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त भी कराना था।

अब उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन का बोलबाला चारों ओर दिखाई देने लगा, अंग्रेज शासकों ने बंगाल को टुकड़ों में विभाजित कर दिया। सभी युवा छात्र स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। इस प्रकार के माहौल को देखकर मेघनाथ साहा भी स्वयं को ना रोक सके और वे भी मातृभूमि की रक्षा के लिए उस आंदोलन में शामिल हो गये। न घर की चिंता की, न अपनी छात्रवृत्ति की, लक्ष्य था सिर्फ एक - 'भारत माता की आजादी।' परिणाम यह हुआ कि उन्हें स्कूल से बेदखल कर दिया गया।

लेकिन कहते हैं ना, कि सफलता के एक द्वार बंद हो जाये तो क्या?दूसरे द्वार स्वयं ही खुल जाते हैं। एक निजी संस्था की मदद से उन्हें दूसरे स्कूल में तत्काल दाखिला मिल गया। उनकी कुशाग्र बुद्धि के कारण वहाँ भी उन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी। ये देखकर उनके भाई जयनाथ ने भी छोटे भाई मेघनाथ की यथोचित सहायता की ताकि वे अपनी पढ़ाई जारी रखें।

मेघनाथ साहा ने गणित विषय के साथ-साथ इतिहास, संस्कृत, विज्ञान व ज्योतिष आदि विषयों का भी अध्ययन किया। सन् 1909 में भौतिकी की परीक्षा में वे पूरे कॉलेज में प्रथम आये। गणित, अंग्रेजी, संस्कृत व बाँग्ला भाषा में उन्हें पूरे बंगाल में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये। अब वे ढाका कॉलेज में आये और वहाँ से सन् 1911 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। गणित व रसायन शास्त्र के बाद उन्होंने जर्मन भाषा का भी अध्ययन किया। प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता में बीएससी में दाखिला मिलने के बाद उन्हें जे.सी. बोस और पी.सी. राय जैसे महान व्यक्तियों से मिलने, जानने और सीखने का सुअवसर मिला।

सन् 1913 में बीएससी आनर्स प्रथम श्रेणी में और सन् 1915 में एमएससी की डिग्री हासिल कर ली, लेकिन देशभक्त नेताजी सुभाषचंद्र बोस का साथ देने के कारण सरकार ने उन्हें भारतीय वित्त सेवा में बैठने की अनुमति नहीं दी। वे ट्यूशन पढ़ाने लगे। इसी बीच सन् 1916 में वे गणित प्रवक्ता के रूप में नियुक्त हुये। लेकिन एक शिक्षक के साथ विवाद होने के कारण गणित प्रवक्ता होने के बावजूद उन्हें भौतिक विभाग में भेज दिया गया। बीएससी तक भौतिकी का ज्ञान होने के बावजूद कुशाग्र मेघनाथ साहा एमएससी के छात्रों को बड़ी ही कुशलता व निपुणता से पढ़ाया करते थे जिससे उनके छात्र उनसे बेहद प्रभावित थे।

भौतिक शास्त्र के उच्च ज्ञान के लिये उन्होंने जर्मन वैज्ञानिक 'आइंस्टीन के सिद्धान्त' का गहन अध्ययन किया और एस.एन. बोस के साथ मिलकर 'सापेक्षता के सिद्धांत' का अंग्रेजी में रूपांतर

किया जिसे सन् 1918 में कोलकाता विश्वविद्यालय से प्रकाशित किया गया। सन् 1917 में उन्होंने मैक्सवेल के कार्य पर आधारित अपना पहला शोध पत्र लिखा जो विज्ञान पत्रिका 'फिलोसिफिकल मैंगजीन' में प्रकाशित हुआ। इन सबके पश्चात् उन्होंने एक उपकरण तैयार किया जिसमें यह दिखाई देता था कि जब प्रकाश किसी सूक्ष्म वस्तु पर पड़ता है तो उस वस्तु पर दबाव पड़ता है। मेघनाथ साहा ने इसे नापकर दिखाया और इस तरह उन्होंने 'प्रकाश दाब सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया। उनके द्वारा 'विकिरण दाब के सिद्धान्त' व 'चुंबुकीय सिद्धांत' पर लिखे शोध प्रबंध के कारण उन्हें कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा डीएससी की डिग्री हासिल हुई।

शोध कार्य के चलते और छात्रवृत्ति मिलने के बाद सन् 1919 में उन्होंने यूरोप की यात्रा की। सौभाग्य से जिस जहाज में मेघनाथ साहा यात्रा कर रहे थे उसमें वरिष्ठ भारतीय रसायनशास्त्री डी. सी. राय भी मौजूद थे। दोनों मेधावियों के बीच लम्बी बातचीत व गहन चर्चा हुई। मेघनाथ साहा ने यूरोप में रहकर अनेक वैज्ञानिकों से मुलाकात की और अध्ययन भी करते रहे। इसी दौरान कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने उन्हें टेलीग्राम किया कि वे वापस आकर अपना अध्ययन कार्य प्रारम्भ करें।

देशभक्त साहा स्वदेश वापस आ गये और अपने अध्ययन कार्य में व्यस्त हो गये। भौतिकी शास्त्र के प्राध्यापक पद पर रहते हुए भी अपना अनुसंधान कार्य जारी रखा। उसी समय उन्हें अलीगढ़ व इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भी पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया। उनकी पढ़ाने की कुशलता को देखते हुये एक ओर बनारस विश्वविद्यालय में शांतिस्वरूप भटनागर बुला रहे थे तो दूसरी ओर 'भारतीय मौसम विज्ञान संस्थान' के निदेशक सरकारी पद पर कार्य करने के लिये आग्रह किया जा रहा था। पर मेघनाथ साहा ने अपना अध्ययन कार्य में व्यस्त रहना उचित समझा।

सन् 1923 में मेघनाथ साहा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद को संभाला। सन् 1927 में वे लंदन के रॉयल सोसाइटी के फैलो निर्वाचित हुये और सन् 1932 में उत्तर प्रदेश अकेडमी ऑफ साइंस की स्थापना की। इसे देखकर तत्कालीन उ.प्र. सरकार ने उन्हें बधाई संदेश भेजा। उन्हें सरकारी व रॉयल सोसाइटी दोनों से आर्थिक सहायता मिलने लगी। जिसका सदुपयोग उन्होंने आभामंडल पर अनुसंधान कार्य में लगाया।

विज्ञान के लिए हमेशा नित्य नये व अद्भुत कार्य करने वाले मेघनाथ साहा ने इलाहाबाद में वैज्ञानिकों का एक दल तैयार किया क्योंकि वे चाहते थे कि वैज्ञानिकों को आपसी मेलजोल के लिए अधिक से अधिक अवसर मिलने चाहिये इसके लिए उन्होंने 'साइंस अकाडमी' की नींव रखीं।

सन् 1944 में अन्य भारतीय वैज्ञानिकों के साथ मेघनाथ साहा रूस व अमेरिका की यात्रा पर गये। इन यात्राओं का उद्देश्य साइक्लोट्रान की स्थापना करना था। डॉ. मेघनाथ साहा के निरंतर

प्रयास से 'यूनिवर्सिटी और कॉलेज ऑफ साइंस' के परिसर में 'इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स' की स्थापना हुई।

मेघनाथ साहा को प्रकृति सौन्दर्य से बेहद प्रेम था खासकर नदियों से। वे अच्छे तैराक भी थे। एक वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने नदियों पर भी कार्य किया और अनेक परियोजनाएँ बनाई। उनके अथक प्रयास व लेखों के कारण सन् 1942 में 'दामोदर घाटी परियोजना' पर विकास कार्य प्रारंभ हुआ।

डॉ. मेघनाथ ने बचपन से ही खगोलशास्त्र, विभिन्न देशों के प्राचीन व आधुनिक कैलेण्डर का भी अध्ययन किया था। वे मूलतः दो अमूल्य संस्थानों की स्थापना के लिए खास तौर से जाने जाते हैं। नाभिकीय भौतिकी संस्थान की स्थापना के लिए और दूसरा जीव भौतिकी के लिए सन् 1952 तक कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में काम करने के बाद सन् 1956 तक भौतिकी के अमेरिटस प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। सन् 1950 से सन् 1956 तक उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स के संस्थापक निदेशक के पद को गौरवान्वित किया। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उनका अद्वितीय योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

सन् 1920 में उन्होंने तारकीय वर्णक्रम खोज निकाला। तारकीय वर्णक्रमों का भेद जानना, गणित सिद्धांत व तापगति के नियमों को लागू करने का भरसक प्रयास किया। सन् 1938 में उन्हें बोस रिसर्च इंस्टीट्यूट का निदेशक नियुक्त किया गया इस पद पर रहते हुये भी उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण अनुसंधान किये।

आकाशीय पिंडों की दशा, उनकी चमक, तापक्रम, वायुमंडल की बनावट आदि के बारे में उन्होंने महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की। लेकिन उनके प्रत्येक कार्य के पीछे छिपे सामाजिक उद्देश्य के प्रति जागरूकता पैदा करना था। उन्होंने आने वाले समय में शिक्षा, औद्योगीकरण, राष्ट्रीय आयोजन, नदी घाटी परियोजना, समाजवाद, कृषि व सहकारिता जैसे मुद्दों पर उस समय चर्चा की। सन् 1938 में देश की आजादी के लिए सुभाषचंद्र बोस को सलाह दी थी कि आजादी के बाद देश को उन्नति व प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये हम सभी को बड़े पैमाने पर विशुद्ध व व्यावहारिक अनुसंधान कार्य प्रारंभ करना होगा, तभी भारत एक प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र बनेगा।

सन् 1938 में श्री जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय योजना समिति का गठन किया गया, समिति की ओर से डॉ. मेघनाथ साहा को ईंधन व शक्ति उपसमिति का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1940 में बोर्ड ऑफ साइंटिफिक एंड इंस्टीट्यूट रिसर्च के सदस्य भी रहे। सन् 1947 में इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स की स्थापना की जो वर्तमान में 'साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स' के नाम से जाना जाता है।

वे साइंस एंड कल्चर पत्रिका के सम्पादक भी बने। और विज्ञान के प्रसार व प्रचार के लिये हमेशा उल्लेखनीय कार्य करते रहे और अनेक पुस्तकों की रचना भी की जिसमें 'ए ट्रिटीज ऑन द थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी', 'ऑन ए फिजिकल थ्योरी ऑफ द सोलर कोरोना', 'ए ट्रिटीज ऑन हीट', 'ए ट्रिटीज ऑन मार्डन फिजिक्स' और 'माई एक्सपिरीयंस इन रशिया' लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

सन् 1934 में वे भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष और सन् 1937-38 में राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान के अध्यक्ष बने। जर्मनी की विज्ञान अकादमी के सदस्य रहने के साथ-साथ सन् 1952 से सन् 1956 तक संसद सदस्य भी रहे। सन् 1956, 16 फरवरी को जब वे राष्ट्रपति भवन जा रहे थे तभी बेहोश होकर गिर पड़े और हमेशा के लिये सो गये।

डॉ. मेघनाथ साहा को सन् 1935-36 में भौतिकी के लिए विश्व प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार से अलंकृत किया गया। आज उनकी स्मृति में अनेक पुरस्कार विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने हेतु वैज्ञानिकों को प्रदान किये जाते हैं।

- 84/262, कटरा मकबूलगंज, लखनऊ-226018 मोबाइल : 9451134140

कविता

उठो सबेरे

रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

उठो सबेरे मुन्ना भइया,
देखो चिड़ियाँ बोलीं।
इन गुलाब की कलियों ने भी,
अपनी आँखे खोलीं।।

पूरब दिशि में लाली देखो,
आगे बढ़ती आये।
अरे! उठो भी तुमको सूरज,
किरणें भेज जगाये।।

बड़े प्यार से तन को छूती,
चली पवन मस्तानी।
हुआ उजाला और मर गयी,
अंधकार की नानी।।

कू-कू कोयल बोल रही है,
तुम भी गीत सुनाओ।
दादाजी ने टेर लगायी,
साथ टहलकर आओ।।

'शिव सदन' मुरार नगर औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, जिला-हरदोई-241127 (उ.प्र.) मोबाइल : 9451411955

इण्टरनेट

अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री'

बच्चों का मन निश्छल होता है,
लिख दो, जो चाहे, अंकित होता है।
अच्छा क्या है, और बुरा क्या,
कुछ भी जान न पाते।
चैटिंग करते फेस बुक पर,
इण्टरनेट पर बातें।
चतुर शिकारी उस पर बैठे,
बच्चों को समझाते।
अच्छी बातों के साये में,
बुरी बात भी दिखलाते।
इसलिए सावधान बच्चो!
अब तुमको प्रण करना होगा।
छोड़ बुरी बातों को केवल,
अच्छी बातों को चुनना होगा।
नहीं तो फिर पछताओगे,
गया समय जो,
कुछ ना कर पाओगे।

424/ए-11, वैशाली इन्कलेव, सेक्टर-9, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.) मोबाइल : 09415017598

मौसम हो गया गरम बड़ा

डॉ. गोपाल राजगोपाल

मौसम हो गया गरम बड़ा,
जैसे करेला नीम चढ़ा।

सूरज की देखी बेशर्मी
हद से गुजर गई है गर्मी,
पारा उसका है बेदर्दी
सात गगन के पार चढ़ा
मौसम हो गया गरम बड़ा।।

ओस के चाटे प्यास बुझे ना
ठंडा पीकर ताप मिटे ना
नरमाई से काम चले ना
जिद्दी से है काम पड़ा
मौसम हो गया गरम बड़ा।।

अग्नि में जब-जब जलता है
सोना निखर-निखर उठता है
लोहे से लोहा कटता है
जीवन इम्तिहान कड़ा
मौसम हो गया गरम बड़ा।।

- 225, सरदारपुरा, पेट्रोल पम्प के पीछे,
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
मोबाइल : 9001295523

चींटी की सीख

डॉ. राजेन्द्र पंजियार

चींटी रानी बड़ी सयानी
नानी कहती रोज कहानी।

जब देखो तब चलती रहती
कभी न थकती कभी न रुकती
पता नहीं कब सोती है यह
सोच-सोच होती हैरानी

भले देखने में छोटी हो
पर किस्मत की क्यों खोटी हो
जब मेहनत से और लगन से
रोज जुटाती दाना-पानी

हाथ नहीं खुरपी-कुदाल है
पर देखो तो क्या कमाल है
अपना घर किस तरह बनाती
साहस इसका बेमिसाल है

पर्वत हो या खंदक-खाई
कैसी भी हो कठिन चढ़ाई
झुंड बांधकर चल पड़ती है
मिल्लत में है छिपी भलाई

कण-कण की कीमत बतलाती
हर पल को अनमोल बनाती
सचमुच, यह छोटा प्राणी, पर
बड़ी सीख हमको दे जाती।

भालू लिए मदारी आया

डमरू का डुग-डुग छाया
भालू लिए मदारी आया

बच्चे निकले शोर मचाते
पहुँचे झटपट दौड़ लगाते
दर्शन से जब घिरा मदारी
नाच दिखाने की तैयारी

जम्बो कहकर उसे पुकारा
फिर डंडे का किया इशारा

लगा नाचने भालू छम-छम
घुंघरू बजे झमाझम झम-झम
'पूछा - क्या तू ब्याह करेगा?
क्या दहेज से जेब भरेगा?'

भालू शीश हिला शरमाया
उसने सबको खूब हँसाया
सबने झट पैसे बरसाए
चला मदारी शीश नवाए।

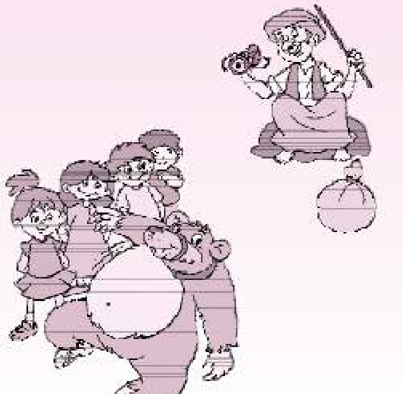

विक्रम शिला कॉलोनी, रामसर, भागलपुर-812002 (बिहार) मोबाइल : 09430507057

हानिकारक प्लास्टिक

अंकुश्री

प्लास्टिक आज हमारे जीवन में रच-बस गयी है, ग्रोसरी की दुकान हो या सब्जी की, दवाखाना हो या भोजनालय, दूध का पैकेट हो या दवा की बोतलें, पानी पीने का गिलास हो या चाय की प्याली, सजाने का फूलदान या खाने की थाली-प्लास्टिक का प्रयोग हर जगह दिखायी दे रहा है, हर प्रकार के डिब्बाकरण में प्लास्टिक का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है, यह कहना ज्यादा अच्छा होगा कि प्लास्टिक हर जगह व्याप्त है। हम इसे सर्वव्यापी कह सकते हैं। प्लास्टिक के उपयोग-क्षेत्र की सूची बहुत लंबी है। इसके आश्चर्यजनक ढंग से सर्वव्यापी होने का प्रमुख कारण इसकी सुलभ उपलब्धता, सुविधाजनक उपयोगिता और कम खर्चीला होना है। लेकिन सारे उपयोग के बावजूद इसमें दो बहुत बड़े ऐब हैं। पहला पर्यावरण से सम्बन्धित है, जो इसके उच्छीष्ट के विघटन के अभाव से उत्पन्न है। इसका दूसरा ऐब है इसमें पाये जाने वाला रासायनिक तत्त्व।

उपयोगिता इतनी अधिक और इसका उच्छीष्ट विघटित नहीं हो पाये तथा इसका रसायन शरीर को नुकसान पहुँचाये यह बहुत दुखद स्थिति है। प्लास्टिक की उपयोगिता से प्रकृति में उत्पन्न इसके नुकसान के कारण इसे बुरी नजर से देखा जाता है। इसके संसर्ग में आने पर भोजन अथवा पेय पदार्थों में रासायनिक बदलाव आ जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है और जिसका काफी दूरगामी कुप्रभाव पड़ता है। इसके रासायनिक ऐब से बहुत सारे पढ़े-लिखे लोग भी अवगत हैं। फिर भी वे इसका धड़ल्ले से उपयोग करते हैं, जो उनकी मजबूरी नहीं, लापरवाही है।

इस उपयोगी मगर नुकसानदेह प्लास्टिक पोलीमर की खोज सन् 1835 ई. में हो गयी थी। किन्तु सन् 1909 ई. में बेल्जियम मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक हेनड्रिक बेकलैंड द्वारा बेकेलाइट की खोज के बाद इसकी उपयोगिता बढ़ गयी और प्लास्टिक युग की शुरुआत हो गयी। हल्का, टिकाऊ और इच्छित आकार में ढाले जाने के गुण के कारण प्लास्टिक का बहुआयामी उपयोग बहुत ही तेजी से बढ़ा, लकड़ी, पत्ता, मिट्टी, कागज, कपड़ा, जूट, धातु, कांच, रूई आदि से तैयार की जाने वाली उपयोगी सामग्रियों का निर्माण प्लास्टिक से होने लगा। कागज, कपड़ा और जूट की थैलियों की जगह प्लास्टिक की थैलियों ने ले ली। कांच और मिट्टी की जगह प्लास्टिक के शीशी, बोतल, मर्तबान आदि

बन गये। विभिन्न प्रकार के फर्नीचर, खिड़की-दरवाजे आदि लकड़ी के बदले प्लास्टिक के बनने लगे। यहाँ तक कि कपड़ा उद्योग में रूई और रेशम की जगह प्लास्टिक जाति के नायलान, टेरीलीन आदि का उपयोग होने लगा। सूती कपड़ों की अपेक्षा सिंथेटिक कपड़ों का रखरखाव आसान होने से कपड़ा उद्योग में इसका धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा। इन कपड़ों के आ जाने से सूती कपड़ों का प्रयोग कम होने लगा और कपड़ा बाजार में प्लास्टिक से बने कपड़ों का प्रचलन तेजी से बढ़ गया। अब धीरे-धीरे लोगों को यह पता चल चुका है कि प्लास्टिक के पात्रों में रखे भोज्य और पेय पदार्थ हों या सिंथेटिक कपड़े - इनका उपयोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। यह दूसरी बात है कि जानते हुए भी लोगों द्वारा प्लास्टिक का विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जा रहा है।

भोजन परोसने के लिये प्राचीन काल से पलाश, महुआ, साल, कटहल, केला आदि की पत्तियों से बने पत्तल का उपयोग होते रहा था। प्रकृति से जुड़े इन पदार्थों का उपयोग प्लास्टिक की तरह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं था। कुछ लोग आज भी पत्तल का ही उपयोग करना पसंद करते हैं। दक्षिण भारत और अन्य कई जगह आज भी केला के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है। बड़े-बड़े होटलों में स्टील की प्लेट तो दी जाती है, मगर भोजन परोसा जाता है केले के पत्ते पर ही। इससे भोजन की शुद्धता बनी रहती है। पत्तल पर भोजन करना सामाजिक अर्थ व्यवस्था का एक हिस्सा है। पत्तल उद्योग में लगे हजारों लोगों को इससे संबल प्राप्त हो जाता है। ग्रामीणों को रोजगार मिल जाना बहुत बड़ी उपलब्धि है। पत्तल-निर्माण के कार्य में ग्रामीण और आदिवासी परिवारों में पुरुषों के साथ-साथ महिलाएँ और बच्चे भी लगे रहते हैं। उन्हें पत्तियाँ तोड़ कर लाने उनसे पत्तल बनाने और बने पत्तल को बाजार में जाकर बेचने का काम मिल जाता है। झारखण्ड और छत्तीसगढ़ जैसे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में पत्तल का निर्माण एक बहुत बड़ी उपलब्धि और आदिवासियों की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का प्रमुख साधन है। पत्तल के उपयोग का सबसे बड़ा लाभ प्लास्टिक की तुलना में स्वास्थ्य पर इसका सकरात्मक प्रभाव है। अपनी सोच को थोड़ा मजबूत और संकल्पित कर लिया जाये तो प्लास्टिक के पत्तल आदि का उपयोग बंद करना कोई बड़ी बात नहीं है। आरंभ के कुछ दिनों तक भले अटपटा लगे, लेकिन जल्द ही प्राकृतिक रूप से उत्पन्न पत्तों से बने

पत्तलों का उपयोग पूर्ववत लोकोपयोगी हो जायेगा।

छोटे होटलों और ढाबाओं की संख्या हजारों नहीं, लाखों में है, जहाँ प्लास्टिक के कप और गिलास का उपयोग बेरोक-टोक हो रहा है। कप, गिलास, थाली, थैला आदि के रूप में प्लास्टिक का नित्य जो उपयोग बढ़ रहा है, उससे हम सभी वाकिफ हैं। शादी-प्रीतिभोज, पूजा-पाठ, जन्म-मरण जैसे आयोजनों में प्लास्टिक के कप, गिलास और थाली का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। उपयोग से पूर्व इन्हें धोया नहीं जाता। इससे इनमें सटा रसायन सीधे पेट में चला जाता है। प्लास्टिक के इन पात्रों में भोजनादि खास कर गरम पदार्थ रख देने से उसमें रासायनिक गंध और स्वाद का असर स्पष्ट रूप से आ जाता है।

प्लास्टिक की रंगीन थैलियाँ तो स्वास्थ्य के लिए और भी अधिक खतरनाक हैं। प्लास्टिक को रंगीन बनाने के लिए घातक रसायनों का उपयोग किया जाता है। इसलिये उन थैलियों में रखी खाद्य वस्तुएँ रसायनों के संसर्ग में आकर विषैली हो जाती हैं। इसलिये प्लास्टिक के इन पात्रों के उपयोग का स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है।

स्वास्थ्य के लिये नुकसानदायक और पर्यावरण के लिए खतरनाक प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाने के नीतिगत निर्णय से सभी सहमत हैं। मगर व्यवहार में इसकी रोकथाम नहीं हो पायी है। सन् 1994 में 'मैटिटाइम पाल्यूशन ट्रीटी' नामक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता के अनुसार समुद्रों तथा महासागरों में प्लास्टिक का कचरा फेंकने पर प्रतिबंध है। किन्तु कानून बना देने मात्र से किसी समस्या का समाधान नहीं हो पाता। प्लास्टिक के निर्माण, इसके उपयोग और कचरा फेंकने सम्बन्धी कानून का हश्र भी यही हो रहा है। इसके लिए हर व्यक्ति को स्वेच्छा से आगे आना होगा। लेकिन आगे लाने का कार्य पढ़े-लिखे और बुद्धिजीवियों द्वारा ही संभव है।

प्लास्टिक के सार्वजनिक उपयोग की तरह इसके पुनर्पयोग की व्यवस्था भी एक गंभीर समस्या है। विघटन और पुनर्पयोग नहीं हो पाने के कारण कचरा के रूप में यह जिस तरह हमारी धरती और पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है, वह आने वाले दिनों के लिए बहुत ही खतरनाक साबित होगा। आज भी यह एक विकराल समस्या का रूप ले चुका है। हालांकि पुनर्पयोग इसका विकल्प नहीं है, क्योंकि जहाँ इसके पुनर्पयोग की सुविधा है, वहाँ की स्थिति और भी खराब है। इसकी रिसाइक्लिंग के दौरान जो गैसें निकलती हैं, वे स्वास्थ्य के लिए अति घातक हैं, इसलिए इसके पुनः उपयोग की बात सोचना सर्वथा अनुपयुक्त और अव्यावहारिक है।

गाँवों और कहीं-कहीं शहरों में भी नदियों और तालाबों का जल पीने और स्नान के लिए प्रयुक्त होता है। पटना, कोलकाता, वाराणसी, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद जैसे अनेक शहर नदी के किनारे बसे हुए हैं। इन शहरों की आबादी अधिक होने से नदी का प्रदूषण भी अधिक होता है और प्लास्टिक के कचरा से नदी-नाले भरे होते हैं। प्लास्टिक के कचरा के कारण नदियों और तालाबों का जल अशुद्ध हो गया है। प्लास्टिक स्वयं तो गल नहीं पाता, अपने आसपास यह दूसरे कचरों को भी जमा कर लेता है। इससे प्लास्टिक बहुल क्षेत्र में प्रदूषण की विकरालता सहज अनुमान्य है। नदियों की सतह पर तैरते प्लास्टिक तक ही खतरा नहीं, मुख्य खतरा तो प्लास्टिक का पानी में भींग कर जल-स्रोतों की तलहटी में जाकर बैठ जाना है, नदियों या तालाबों की सतह अथवा तलहटी में प्लास्टिक के कचरों के साथ-साथ दूसरे विजातीय पदार्थ भी जमा हो जाते हैं और इस कारण फैली गंदगी को देखकर हम सहज ही नदियों और तालाबों की तलहटी में प्लास्टिक के कारण फैली गंदगी का अनुमान लगा सकते हैं।

धरती पर प्रति वर्ष 250 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होने का अनुमान है। अकेले चीन में 160 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा निकलता है। भारत में इसकी मात्रा 45 लाख टन प्रति वर्ष है। प्लास्टिक को पूर्ण रूप से विघटित होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। जैव विघटनीय नहीं होने के कारण प्लास्टिक के कचरा का हर तरफ अंबार लगता जा रहा है, जो पर्यावरण के लिए एक गंभीर समस्या बन चुका है और साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी यह हानिकारक होता जा रहा है।

प्लास्टिक का कचरा नदियों और तालाबों में जमा हो जाने के कारण मछलियों और अन्य जलीय

जीवों का जीवन प्रभावित हो गया है। यही स्थिति समुद्र के किनारे और अंदर रहने वाले जलीय जीवों की भी है। जल में तैरते प्लास्टिक को जलीय जीवन निगल जाते हैं। इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता ही है, ऐसे जीव को खाने वाले मनुष्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। मछलियाँ और जलीय जीव ही नहीं, गायें और बकरियाँ भी प्लास्टिक की थैलियाँ बड़े चाव से खाने लगी हैं। प्लास्टिक की ये थैलियाँ ऐसे मवेशियों के पेट में जमा हो जाती हैं और पाचनतंत्रीय रसायनों का इस पर प्रभाव शुरू होता है, जिससे जानवरों में कई प्रकार की बीमारियाँ होती ही हैं, ऐसे बीमार जानवरों के दूध या माँस का प्रयोग करने वालों पर भी इसका सीधा नुकसानदायक प्रभाव पड़ता है।

पानी या मिट्टी में वर्षों तक रहने के बावजूद गल नहीं पाने के कारण खेतों में प्लास्टिक का कचरा बढ़ गया है। इससे खेत की उर्वरता प्रभावित हो ही रही है, चारों तरफ इसका कचरा भी बढ़ता जा रहा है। इस कारण चारों तरफ गंदगी का साम्राज्य-सा हो जाता है, जो पर्यावरण के लिए अति घातक और स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है।

प्लास्टिक के खतरों को जानने के बावजूद कुछ लोग इसके पक्ष में अपना तर्क प्रस्तुत करते हैं। ऐसे लोगों द्वारा कहा जाता है कि प्लास्टिक के उपयोग से वृक्षों की कटाई कम होती है, जो पर्यावरण के लिए हितकर है। लेकिन ऐसी बातें क्षणिक आवेशित हैं, दूरदर्शितापूर्ण नहीं, पेड़ लगा कर उनकी संख्या बढ़ायी जा सकती है, मगर प्लास्टिक के उपयोग से उत्पन्न समस्या का समाधान बिलकुल कठिन है। प्लास्टिक के बहु-उपयोग का दुष्परिणाम ही है कि धरती बंजर बनती जा रही है और नदियां प्रदूषित होती जा रही हैं। नदियों और नालों में जल प्रवाह बाधित हो गया है। इससे वहाँ गंदगी बढ़ती जा रही है और उस गंदगी का रूप भी विकराल होता जा रहा है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सिलसिला यदि इसी तरह जारी रहा तो बंजर धरती का क्षेत्रफल बढ़ता जायेगा और जल-निकासी भी एक वृहत् समस्या का रूप ले लेगी। तब क्या वृक्ष और क्या वन? बिना वृक्ष या वन के प्लास्टिक से भरी इस धरती पर रहने वालों के स्वास्थ्य की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

यदि हमें रहना है स्वस्थ्य, प्लास्टिक का नहीं उपयोग करें।
कीमती जीवन को बचावें हम, प्रकृति का सदुपयोग करें।।

- 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, रांची-834010 (झारखण्ड) मोबाइल : 8809972549

श्रमजीवी चींटी

शिव अवतार रस्तोगी 'सरस'

मेरी प्यारी चींटी बहना! तेरी हिम्मत का क्या कहना?
दिवस रात चलती रहती हो, श्रम करना है तेरा गहना।।
सीधी चलती हो कतार में, कभी न चूकी हो, प्रहार में।
एक साथ मिल हमला करतीं, दुश्मन मरता एक बार में।।
गर्मी-सर्दी हो, या तूफां, कभी न कोई कपड़ा पहना।
मेरी प्यारी चींटी बहना! तेरी हिम्मत का क्या कहना?

'संचय' करना लक्ष्य तुम्हारा, चीनी, चावल, शहद, छुआरा।
हुए 'एकता' पर बलिहारी, हाथी तक तुमसे है हारा।।
अन्तिम क्षण तक लड़तीं रहती, दूरदर्शिता का क्या कहना
मेरी प्यारी चींटी बहना! तेरी हिम्मत का क्या कहना?

यदि गुड़ का ढेला हो भारी, कभी न तुमने हिम्मत हारी
कुतर-कुतर कर देतीं हल्का, यह भी तो है चाल तुम्हारी।
भारी बोझ उठा लाती हो, हम भी सीखें तुम-सा रहना।
मेरी प्यारी चींटी बहना! तेरी हिम्मत का क्या कहना?

तुम सब हो श्रम-जीवी चींटी अपने ही 'दम-खम' पर जीतीं
सदा संगठन-सूत्र तुम्हारा संग-संग खाती पानी पीती,
संघर्षों से हार न मानी, सीखा कष्टों को हँस सहना।।
मेरी प्यारी चींटी बहना! तेरी हिम्मत का क्या कहना?

मालती नगर, डिप्टी गंज, मुरादाबाद-244001 मोबाइल : 9456032671

छुट्टियाँ भई छुट्टियाँ

शैलेंद्र सरस्वती

पेड़ों की डाली झूलना,
नदिया में जा के तैरना।
या उँघना दोपहर को,
या कोई फिल्म देखना।
छुट्टियाँ भई छुट्टियाँ।
आलस की जैसे घुट्टियां।
दादा-दादी के गांव में,
नाना-नानी की छांव में।
खेल खेलें कितने हम,
बूढ़े बरगद के पाँव में।
छुट्टियाँ भई छुट्टियाँ
गुस्सा भगाती बूट्टियाँ।
कॉपी-किताबें देखे ना,
बस्ते को भूल जायें हम,
कुछ सीखें कुदरत से भी,
अब, जो नहीं सुन पाये हम।
छुट्टियाँ भई छुट्टियाँ।
कुदरत की जैसे डाकियाँ।

नारायणी निवास, मोबाइल टावर के सामने, धरणीधर कॉलोनी, उस्ता बारी के बाहर, बीकानेर-334001 (राजस्थान) मोबाइल : 9116727333

विश्व के प्रथम

काली शंकर

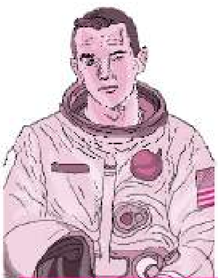

किसी देश का इक वैज्ञानिक,
अन्तरिक्ष विद्या में निपुण था।
बाद में फिर वह उसी देश का,
एक महान राष्ट्रपति बना था।

क्या बतला सकते हो श्रीमन,
क्या था उस मानस का नाम।
जिसने अन्तरिक्ष कामों से,
जग में बहुत कमाया नाम।

ये श्रीमन् अब्दुल कलाम जी,
भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति।
एस.एल.वी-थ्री इसरो के,
राकेट के ये प्रथम निदेशक।

दुनिया में बस एक ही मानव,
अन्तरिक्ष में किया प्रवास।
सबसे ज्यादा इतना लम्बा,
जो बन गया है विश्व रिकार्ड।

यह प्रवास था चार सौ सैंतिस,
दिन का लगातार का रिकार्ड
क्या बतला सकते हो श्रीमन्,
किसने बनाया था यह रिकार्ड।

ये श्रीमन् थे रूस देश के,
वैलेरी पालिकोव महाशय।
पेशे से हैं मेडिकल डॉक्टर,
मीर अंतरिक्ष स्टेशन हो आये।

अन्तरिक्ष का सबसे लम्बा,
यह प्रवास है खासमखास।
बाईस वर्षों से अजेय है
कभी न टूटेगा, है आस।

प्रथम राजनीतिज्ञ कौन हैं,
जो सक्रिय राजनीति दौरान।
अन्तरिक्ष भी होकर आये,
जिनको मिला बहुत सम्मान।

ये श्रीमन् थे जैक गार्न,
जो स्पेस भाटल उड़ान के द्वारा।
अन्तरिक्ष से होकर आये,
जग में अतिशय नाम कमाया।

अन्तरिक्ष में जाने वाला,
सबसे बूढ़ा व्यक्ति कौन था।
कितनी उम्र थी इस मानस की,
जब यह अन्तरिक्ष पहुँचा था।

जॉन ग्लेन मानस का नाम था,
उम्र थी सतहत्तर वर्षों की।
अमरीकी सीनेटर भी बने थे,
प्रथम अमरीकी अन्तरिक्ष यात्री।

अन्तरिक्ष में भोजन करने,
वाले ये प्रथम व्यक्ति थे।
दूजी बार सतहत्तर उम्र में,
जाने वाले ये ही व्यक्ति थे।

छः बार अन्तरिक्ष में जाने वाला,
चार अन्तरिक्ष यानों का कमान्डर।
तथा चन्द्र यात्रा में गया जो,
जीवन में जो दो दो बार।

क्या बतला सकते हो श्रीमान्,
कौन था यह महान मानव।
जिसने इतने 'प्रथम कमाएँ',
कितना प्रतिभावान था मानव।

ये श्रीमन् थे जान यंग,
जो अमरीका के वासी थे।
अमरीकी स्पेस भाटल के,
प्रथम उड़ान के कमाण्डर थे।

के-1058, आशियाना कॉलोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-226012 (उ.प्र.) मोबाइल : 09935793961

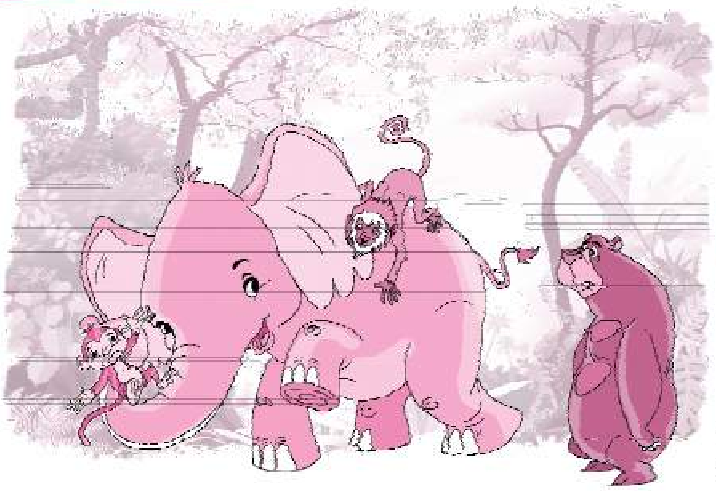

गलती का अहसास

पवन चौहान

किसी जंगल में एक भालू और उसका बेटा रहते थे। पिता भालू का नाम भोलू तथा उसके बेटे का नाम चुनु था। भोलू अपने बेटे चुनु से बहुत प्यार करता था। चुनु जहाँ बहुत ही प्यारा और शांत था वहीं उसका पिता भोलू अपने नाम से अलग बहुत ही झगड़ालू और शातिर था। भोलू को हर वक्त कोई न कोई शरारत ही सूझती रहती थी। जंगल के सभी जानवर उससे डरे-डरे रहते थे। आज उसने गोल्डी बंदर के तीन दिन पहले जन्मे बच्चे को पेड़ से नीचे फेंक दिया और खूब जोर-जोर से हँसने लगा। यह तो शुक्र था कि पेड़ के नीचे से गुजर रहे हाथी ने उसे देख लिया और उसे अपनी सूँड़ से पकड़कर नीचे गिरने से बचा लिया। आज हाथी न होता तो गोल्डी का बच्चा मर गया होता। हाथी ने भोलू को उसकी इस गलती के लिए खूब खरी-खोटी सुनाई। भोलू चुपचाप हाथी की बात सुनता रहा। इस वक्त उसका बोलना उसके लिए खतरा पैदा कर सकता था। वह थोड़ी ही देर में मुँह बंद करके चुपचाप वहाँ से खिसक लिया। परन्तु उसे हाथी की बात से जरा भी फर्क नहीं पड़ा।

दूसरे दिन वह एक पेड़ पर चढ़ा और मधुमक्खियों के बनाए छत्ते पर जाकर छत्ते को हिलाने लगा और मधुमक्खियों से शरारत करने लगा। मधुमक्खियाँ बोलीं, 'यदि तुम्हें शहद ही खाना है तो खा लो। लेकिन छत्ते को मत छेड़ों। इसमें रानी मधुमक्खी के बहुत से बच्चे हैं जो कुछ समय के बाद आँखें खोलने वाले हैं। कृपया इन बच्चों की जान बख्श दो।'

इतना सुनने की ही देरी थी कि भोलू ने बड़ी-सी टहनी तोड़ी और उससे छत्ते पर जोरदार प्रहार करके उसे पेड़ से नीचे गिरा दिया। इस प्रहार के कारण बहुत सारी मधुमक्खियाँ और बच्चे मर गए। गुस्से में आगबबूला मधुमक्खियों ने उसे खूब काटा लेकिन उसे इससे कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। वह पेड़ से नीचे उतरा और चुनु को शहद खाने के लिए कहने लगा। इस पर चुनु ने कहा, 'पिता जी, मैं यह शहद नहीं खाऊँगा। आपने बेवजह ही इतनी सारी मधुमक्खियों के साथ-साथ

उनके बच्चों को भी मार दिया। यह बहुत गलत किया आपने।' यह कहकर चुनु वहाँ से जाने लगा तो भोलू ने उसे रोककर उससे वादा किया कि वह आगे से ऐसा काम कभी नहीं करेगा। चुनु को यह सुनकर बहुत अच्छा लगा। वह अब अपने पिता के साथ घर के लिए रवाना हो गया।

भोलू ने अपने बच्चे से बहुत झूठ बोला था। अगले दिन सब कुछ भुलाकर भोलू फिर अपने काम में लग गया था। इस वक्त उसका बेटा उसके साथ नहीं था। वह एक पेड़ पर चुपके से चढ़ा और बेचारी चुनमुन चिड़िया के घोंसले से सारे अण्डों को नीचे जमीन पर फेंक दिया। चुनमुन जब वापस आई तो अपने अजन्मे बच्चों की यह हालत देखकर बहुत रोई और भालू को बहुत बुरा-भला कहा।

सभी जानवर भोलू से बहुत दुखी थे। वे उसे समझाने के बहुत सारे उपाय कर चुके थे लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हो रहा था। अब वह और ज्यादा बेकार की शरारतें करने लगा था। चुनु ने भी अपने पिता को समझाने के सब उपाय कर लिए थे। लेकिन सब व्यर्थ। वह निर्दयता की सारी हदें पार कर चुका था। सभी जानवरों के डर-डर के दिन बीत रहे थे।

एक दिन सुबह-सुबह ही भोलू इधर-उधर दौड़ रहा था। वह बदहवास-सा यहाँ-वहाँ कुछ खोज रहा था। उसे ऐसी हालत में पहले किसी ने नहीं देखा था। वह जोर-जोर से चुनु को आवाज लगा रहा था। इसका साफ अर्थ था कि उसका चुनु कहीं खो गया है। उसे चुनु का कहीं कोई सुराग नहीं मिल रहा था। यहाँ-वहाँ दौड़-दौड़ कर भोलू की साँस फूलने लगी थी। किसी को भी चुनु के बारे में कुछ पता नहीं था। सभी पशु-पक्षियों को प्यारे से चुनु की फिक्र हो रही थी। चुनु के बारे में किसी अनजान डर की सोच के कारण भोलू को रोना आ रहा था। उसे किसी अनहोनी की आशंका हो रही थी। वह अभी अपनी इसी उधेड़बुन में ही था कि इतने में चुनमुन चिड़िया उड़ती हुई भोलू के पास आई और उसने बताया कि चुनु नदी किनारे बेसुध पड़ा है। उसे शायद शिकारियों ने न मार गिराया हो। चुनमुन ने अपनी आशंका जाहिर कर दी थी।

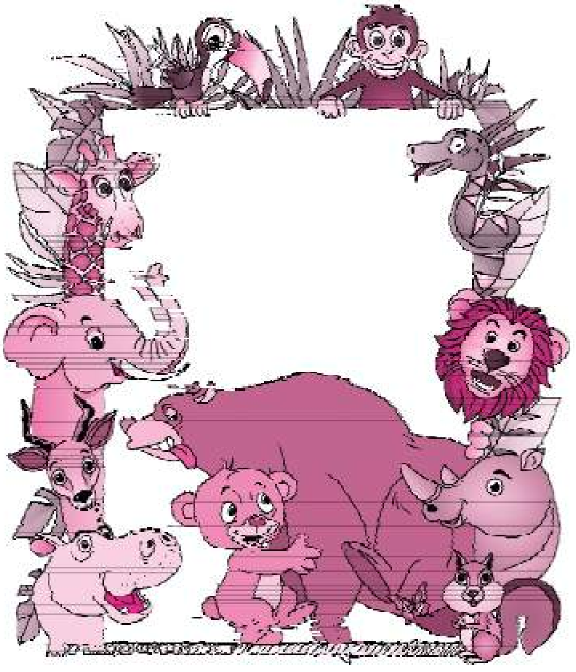

यह सुनकर भोलू के होश उड़ गए। वह बिजली की फुर्ती के साथ नदी की ओर भागा। नदी किनारे जब वह पहुँचा तो उसने देखा चुनु

सचमुच वहाँ अचेत गिरा पड़ा था। भोलू ने चुनु की हर नब्ज को टटोला लेकिन उसकी कोई भी नब्ज नहीं चल रही थी। भोलू की नजर में चुनु मर चुका था। वह चुनु को देखकर दहाड़े मार-मार कर रोने लगा। उससे अपने बेटे की मृत्यु का दुख सहन नहीं हो पा रहा था। इस वक्त तक सभी जानवर यहाँ इकट्ठे हो चुके थे। इस भीड़ में से गोल्डी बंदर बोला, 'बच्चे की मृत्यु का दुख क्या होता है। अब पता लग रहा है इसे। तब तो सभी जानवरों, पक्षियों के बच्चों को मारता फिरता था। उन्हें परेशान करता रहता था। अब पता लगेगा कितना कष्ट होता है। जब अपना कोई बिछड़ता है।' गोल्डी ने भोलू द्वारा अपने बच्चे को फेंकने का गुस्सा अब जाकर इस तरह से निकाला था।

भोलू को यह सब सुनाई दे गया था। उसे इस वक्त अपनी सारी गलतियाँ स्मरण हो आई थीं। उसे याद आ रहा था कैसे उसने जानवरों व पक्षियों के बच्चों को तंग किया था, उन्हें मौत की नींद सुलाया था। उसे इस समय उनके माँ-बाप के दुखों का अहसास हो रहा था। वह दहाड़े मार-मारकर भगवान से एक ही विनती किये जा रहा था कि भगवान उसके बच्चे को जीवित कर दो। मैं अब किसी भी जानवर को तंग नहीं करूँगा। उन्हें जरा भी कष्ट नहीं पहुँचाऊँगा। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है। आस-पास खड़े सभी जानवर जान गए थे कि इस बार भोलू दिल से बातें कह रहा है। भोलू की अश्रुधारा थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

'पिता जी, क्या हो रहा है यहाँ। आप क्यों रो रहे हैं?और ये सब यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं।' चुनु अपनी आँखें मलता हुआ यह सब कह रहा था।

चुनु को जिंदा देखकर भोलू की खुशी का ठिकाना न रहा। वह उसे प्यार से चूमता जा रहा था। 'बेटा तुम जिंदा हो। भगवान का शुक्र है।'

'अच्छा, हाँ . . . वो पिता जी शिकारी आए थे और वे शेर मामू को पकड़ना चाह रहे थे। उन्होंने बेहोशी की सुई छोड़ी जो शेर के बजाय गलती से मुझे लग गई और मैं यहाँ झाड़ियों के पास बेहोश होकर गिर पड़ा। वे लोग शेर के पीछे भाग लिए।' चुनु ने सारी कहानी सुनाई।

'अच्छा तो यह बात थी। मैं तो डर गया था बेटा।' लेकिन इस घटना ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं अब किसी भी जानवर या पक्षी के बच्चों को तंग नहीं करुंगा। मैं सबके साथ प्यार से रहूँगा। आप सब लोगों को अब मुझसे डरने की आवश्यकता नहीं है।'

यह बात सुनकर चुनु और जंगल के सभी जानवर खुश हो गए थे। सबने भोलू के लिए तालियाँ बजाई।

- गाँव व पोस्ट-महादेव, तहसील-सुन्दर नगर, जिला-मण्डी-175018 (हिमाचल प्रदेश)
मोबाइल : 09418582242

दयालु बालक

भूपिंदर सिंह 'आशट'

रोलफोन्स नामक एक बालक था। उसे पक्षियों व जंगली जानवरों से बहुत स्नेह था। मगर सबसे ज्यादा प्यार वह एक उड़ने वाली चिड़िया 'लारक' से करता था। उसने अपने घर के आँगन में दाना-पानी की व्यवस्था भी कर रखी थी। उसके आँगन में प्रायः पक्षी बेखौफ चहकते, फुदकते व दाना-पानी खाते-पीते थे।

लारक भी रोलफोन्स को अपना सच्चा मित्र व हितैषी समझती थी। वह भी उससे बहुत स्नेह रखती थी। एक दिन वह रास्ते में चला जा रहा था कि उसे लारक की संगीतमय आवाज सुनाई दी। उसने इधर-उधर देखा। एक चिड़िया बेचने वाला एक बड़ा-सा पिंजरा लेकर जा रहा है। उसी पिंजरे में कैद हुई लारक एक मधुर तराना गा रही है। रोलफोन्स को महसूस हुआ कि जैसे उसके तराने में दया व याचना भरी है।

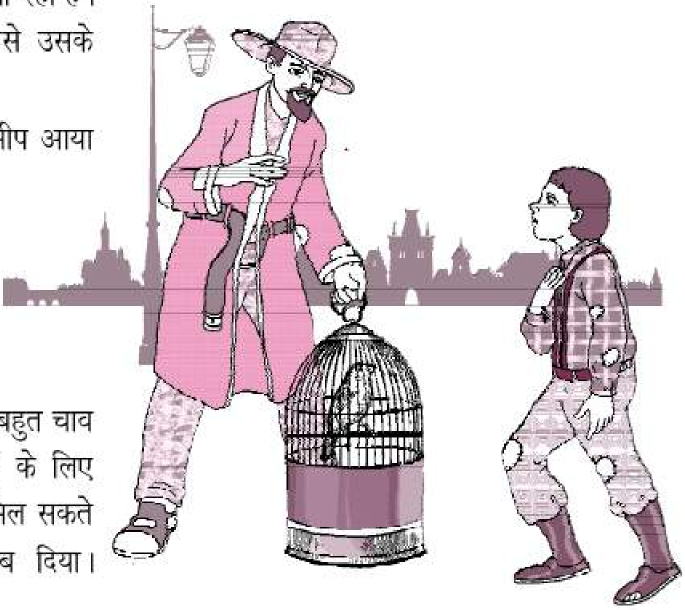

वह चिड़िया बेचने वाले के समीप आया और कहने लगा, 'तुमने इस चिड़िया को क्यों बंदी बना कर रखा है। यह बेहद दुखी लगती है, तुम इसे छोड़ क्यों नहीं देते?'

मैंने इसे बड़ी मेहनत से पकड़ा है। यहाँ के लोग इसका माँस बहुत चाव से खाते हैं, इसलिए मैं इसे बेचने के लिए निकला हूँ। मुझे इसके अच्छे दाम मिल सकते हैं। चिड़िया बेचने वाले ने जवाब दिया।

रोलफोन्स ने उससे चिड़िया का मोल पूछा। चिड़िया वाले ने लारक का जो मोल बताया, उतने रुपये उस समय रोलफोन्स के पास नहीं थे। उसने पिंजरे वाले से विनती की 'कृपया, आप कुछ समय यहाँ ही ठहरिये। मैं घर से पूरे पैसे लेकर आता हूँ।.... इतना कहकर वह घर की ओर भागा।'

दोपहर का समय था। वह चलते-चलते थक गया। उसकी साँस फूल रही थी। वह घर पहुँचा तो पता चला कि माँ घर पर नहीं है। वह बाहर गई थी। माँ, क्या पता कब वापस आए? यह सोचकर रोलफोन्स को बहुत आघात लगा। उसे अब यही चिंता थी कि माँ के आने तक चिड़िया बेचने वाला उसकी प्रतीक्षा नहीं करेगा, बेचारी लारक किसी खरीददार के हाथों बिक कर मारी जाएगी।

अचानक उसे दयावान पादरी 'जेक्सन' की याद आई। वह उसके घर की तरफ दौड़ा। धूप अभी भी तेज थी। दौड़ते-दौड़ते उस के सर में तेज दर्द हो रहा था। फिर भी उसने इस बात की तनिक परवाह नहीं की। पादरी के पास पहुँचकर उसने सारी कहानी एक ही साँस में बयान कर दी। उसने दया भरी आवाज में पादरी से विनती की। 'मुझे चिड़िया की जान बचाने के लिए कुछ पैसों की जरूरत है। अगर पैसे न मिले, तो लारक बिना कसूर मारी जाएगी।'

बच्चे का पक्षियों के प्रति इतना लगाव व प्यार देखकर पादरी जी बहुत खुश हुए। उन्होंने तत्काल जेब से पैसे निकाल कर देते हुए कहा, 'देखो बेटा, तुम्हारे चेहरे से ऐसा प्रतीत होता है कि तुम इस कड़कती धूप में दौड़ कर बीमार हो गए हो। मैं तुम्हें पैसे इस शर्त पर दे रहा हूँ कि तुम चिड़िया खरीदकर सीधा घर जाओगे और आराम से पलंग पर लेट जाओगे।'

बालक ने शर्त स्वीकार कर ली। वह पैसे लेकर एकदम चिड़िया बेचने वाले की ओर दौड़ा। रोलफोन्स जब वहाँ आया तो उसने देखा कि एक मोटी सी औरत बहेलिये से लारक का मोल-भाव कर रही थी।

बालक ने बिना कुछ कहे सुने ही बहेलिए के हाथ में रुपए थमाए और पिंजरा ले लिया। पिंजरा लेकर वह घर में पहुँचा, लेकिन तेज धूप में आने के कारण वह घर के दरवाजे पर ही बेहोश होकर

गिर पड़ा। .... दूसरी ओर दयालु पादरी को बच्चे की बहुत चिंता थी। उसे देखने के लिए वह उसके घर आए। बालक की माँ, पलंग के सिरहाने बैठी, बेहोश बालक की चिंता में रो रही थी।

'घबराओ नहीं बहना! जो दूसरों की प्राणों की चिंता व रक्षा करता है, भगवान खुद उनकी रक्षा करते हैं।' पादरी ने माँ को आश्वासन दिया। बालक ने कुछ देर पश्चात् धीरे-धीरे आँखें खोलीं। लारक का पिंजरा उसके सिरहाने रखा था। चिड़िया ऐसा मधुर व मीठा तराना (गीत) गा रही थी। मानो, परमात्मा से प्रार्थना कर रही हो कि हे मेरे भगवान! मेरे मित्र को जल्द से जल्द ठीक कर दो।

कुछ देर पश्चात् बालक स्वस्थ हो गया। उसके होठों पे खुशी भरी मुस्कान थी। उसने धीरे से पिंजरा उठाया और उसे खिड़की के पास ले गया। फिर उसने आराम से पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। चिड़िया गाती हुई खुले गगन में, बालक का धन्यवाद करती हुई उड़ गई।

बालक उसे प्यार से देख रहा था।

- गाँव व डाक : घग्गा, जिला पटियाला-147102 (पंजाब) मोबाइल : 9463265532

माते

आशीष सिंह

माते जन्म दिया तुमने,
आँचल में सुलाया तुमने।
जब चोट लगी मुझको,
तब दवा लगाया तुमने।

जब होश सम्हाला मैंने,
खाना खिलाया तुमने।
खाना न खाया तुमने,
पर मुझे खिलाया तुमने।।

सब कुछ इस दुनिया में,
यह मुझे बताया तुमने।
पर तुम बिन सब सूना,
यह पता लगाया मैंने।

- कक्षा-8, उम्र-13 वर्ष, कृषक समाज इण्टर कॉलेज, गोला-खीरी
निवास : पुत्र श्री सरनाम सिंह, मो. मुन्नूगंज (कोठी भट्ठा),
पोस्ट-गोला, जिला-लखीमपुर खीरी-262802 मोबाइल : 7376237761

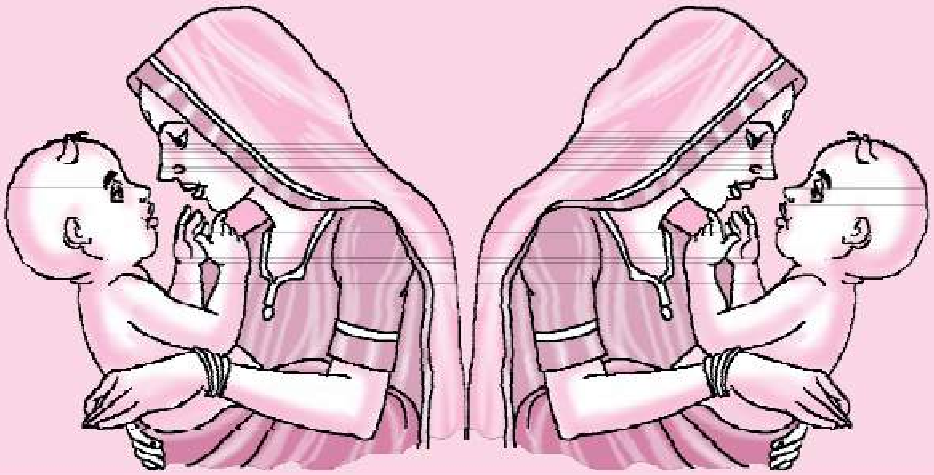

संदेश

समीक्षा

मैं एक बेटा हूँ
अभी अजन्मा हूँ
मेरे साथ एक बहन भी है
वो भी अन्जमी है
आज मम्मी ने गैरकानूनी काम करवाया है
दो जुड़वा भाई-बहन की सच्चाई का पता लगवाया है।
जहाँ खुशी है मेरे लिए वही शोक मेरी बहना के लिए
रब्ब से ऐसा करने का कारण पूछा गया है
तभी अंदर से आवाज आई
बेटा चाहती हो पर बेटी नहीं
अगर हर माँ तेरी जैसी हो तो
तेरे लड़के की शादी के लिए कोई लड़की नहीं
जिस समाज की बुराई से डरती है तू
वही मुझे बहादुर बनाने की हिम्मत रख तू
तभी मैंने भी कहा
माँ, मैं इसकी रक्षा करूँगा
अपने दोस्तों को भी अपनी बहनों की हिफाजत करने को कहूँगा
इसे पल-पल मजबूत बनाना तुम माँ!
छू लें हम बुलंदियाँ ऐसी हिम्मत देना तुम माँ!
शादी इसकी मेरी करनी है,
बेचना-खरीदना नहीं है माँ,
इसके बिन संसार न चल सकता माँ,
क्या अब भी तू न समझी हमारी माँ?

- कक्षा-10-एच, डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, बी.आर.एस. नगर, लुधियाना-141001 (पंजाब)

जिन्दगी

अदिति श्रीवास्तव

देख रहे हैं इस भाग दौड़ में,
कैसे भाग रही है जिन्दगी?
कभी इधर कभी उधर
यूँ ही झाँक रही है जिन्दगी।
कभी सोचा न था -
कि इस कदर समय न मिलेगा,
काम करेंगे और करते रहेंगे
कि अपनों के लिए जरा सा वक्त भी न मिलेगा?
इंसानों को प्रेम और चीजों को
इस्तेमाल के लिए बनाया था,
पर ये क्या किया तूने ए जिन्दगी
कि चीजों से प्रेम और लोगों का इस्तेमाल हो गया?
बचपन में माँ से किया वादा
कि तू चिंता मत कर
मैं दूँगा तेरा साथ
और आज उसी माँ से बात करने का वक्त नहीं!
पापा की उँगली पकड़कर चलते थे
पापा के आने पर उनकी गोद में उछलते थे।
पर आज उनके पास बैठकर
उनका हाल तक पूछने का वक्त नहीं!
ये क्या खेल तेरा अजब जिन्दगी
जिस पढ़ाई की प्रेरणा दी माँ-पापा ने
आज उसी प्रेरणा के खातिर
माँ पापा के लिए ही वक्त न रहा!
जीवन का यही खेल है,
'अदिति' क्या यही पहचान है जिन्दगी।

पुत्री श्री राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, बरगे की गोठ, जनकगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म.प्र.)